अध्याय : 4

"हिरण्यगर्भा" शिल्प विधान

अध्याय : 4

"हिरण्यगर्भा" शिल्प विधान

कवि-मन में उमडती हुई भाव-लहरियों को मूर्तित करने में अभिव्यक्ति विशेष रूप से सहायक होती अनुभूतिजन्य भावकाव्य का यदि प्राण है तो अभिव्यक्तिशब्द उसका शरीर। समयानुसार हृदय में जन्म लेने वाले भावों के प्रकाशन की अभिव्यक्ति जितनी सशक्त होगी, उतना ही काव्य पाठको के मन को आन्दोलित तथा आनन्दित करने में समर्थ होगा। सरस-भाव एवं उसकी अभिव्यक्ति तथा तदनुरूप शब्द और अर्थ का आयोजन इस पर ही काव्य की उत्कृष्टता निर्भर है। भावों का भाषा के माध्यम से व्यक्त करने के लिए कवि जिस कौशल का विधान करता है वही कला है। इस कौशल में जो उपकरण कार्य करते हैं, उनका संग्रहीत रूप ही शिल्प विधान कहलाता है। इसप्रकार विषय और विन्यास परस्पर घनिष्ट सम्बन्धी है। कलात्मक-विन्यास की विशिष्ट शैली द्वारा विषय-वस्तुका प्रतिपादन किया जाता है और रचनाकार का व्यक्तित्व भी उसी द्वारा उजागर होता है।

श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया का साहित्य शिल्प विधान के दृष्टि से समृध्द दिखायी देता है। डालमिया का कृतित्व आधुनिक है, उनके समस्त कृतियों को पढ़ने से दिखायी देता है कि उनके जीवन में सतत परिवर्तनशील परिस्थितियों और परिवर्ध्दनशील अवस्था के साथ-साथ उनकी रचनाओं की आधार भूमि में भी निरंतन परिर्वतन होता रहा। परिणामतः उनकी कृतियों में विषयगत मूल अनुभूतियों की दृष्टि से बहुत विविधता आ गई हैं। दिनेश नंदिनीजी के अधिकांश गीत लौकिक प्रेम से सम्बन्धित है जिसका कारण यह है कि वे संसार के सभी सम्बन्धों का मूलाधार प्रियतम और प्रेमी के सम्बन्धों को ही मानती है। उसी प्रकार दिनेश नंदिनीजी ने अनेक रहस्योन्मुख गीतों की भी रचना की हैं। इसप्रकार उनके कृतियों में भक्तिभावना,

दार्शनिकता, प्रकृति प्रेम आदि विविध विषयों से सम्बन्धित विषय दिखायी देते हैं।

श्रीमती दिनेश नंदिनी की रचनाओं में एक लालित्य मिलता है, भाषा का ही नहीं, भीतर से उमडता हुआ ज्वार का। दिनेश नंदिनीजी अपने समय और अपने देश से कही अलग जाकर केवल भागकर नही बल्कि एक अलग वास्तविकता की खोज में अपने संवाद स्थापित करती है, किसी ऐसे से संवाद स्थापित करती हैं, जो उन्हें सब जगह दिखता है और फिर सबसे ज्यादा उन्हें भीतर दिखता है। इसीलिए स्वतःपर पुनरूक्ति भी है। स्वतः प्रिय भी एक भाव नई घटाओं में अभिव्यक्त होता है लेकिन सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि इसमे कहीं भी अपने समय का, अपने काल का आतंक नहीं है, क्योंकि उल्लेखनीय है कि इन्होंने जब लिखना शुरू किया तो छायावाद का युग था जरूर और उस समय कविताएं छायावाद के स्वर से भिन्न स्वर में लिखी जा रही थी। साथ ही जो भावगीत पहले लिखें जा चुके थें वैसे भावगीत अब ऐंद्रियता की ओर मुड रहे थें। श्रीमती दिनेश नंदिनीजी के गद्यगीत संग्रह, काव्यसंग्रह, उपन्यास तथा कहानी संग्रह है, जिनमें उनके जीवन की गहराई दिखायी देती हैं। उसी तरह उनका "हिरण्यगर्भा" यह काव्यसंग्रह है, जिसमें वह "सृजन के सत्य" को बेहद मार्मिक ढंग से स्वीकारती हैं।

सृजन के सत्य है, सृजन-प्रक्रिया की मर्मान्तक पीडा, जिसकी विशालता को कवयित्री दिनेश नंदिनी "महाकाव्य की पीडा" का नाम देती है, "कैसे हुआ। अचानक, अनजाने ही मुझे महाकाव्य-पीडा के हाथों थमा दिया···।" पुरानी पीढी की कवयित्री होने के नाते जीवनमूल्यों पर उनकी आस्था कम नहीं हुई है, न उनके काव्य पर से परम्परागत पकड ही ढीली हुई हैं। पर परम्परा का नाम ही तो प्रवाह है। उनकी यह परम्परा भी प्रगति उन्मुख है। समय का सत्य उसके साथ-साथ चलता है -

इसप्रकार नये युग की कवयित्री दिनेश नंदिनीजी ने हिन्दी साहित्य में अपनी अलग पहचान बना ली है। महादेवी वर्मा, की तरह उनकी भी अपनी मौलिक और स्वच्छन्द वृत्ति तथा नवीन चेतना के अनुरूप ऐसी भाषा शैली हैं। जो सभी

प्रकार के भावों के हेतु उपयुक्त बन सकें। अस्तु शैली अथवा शिल्प के अनुसार दिनेश नंदिनीजी के "हिरण्यगर्भा" इस काव्यसंग्रह को इसप्रकार परखा जा सकता हैं।

वे क्रमशः इस प्रकार हैं -

1· भाषा ।

2· बिम्ब विधान ।

3· प्रतीक योजना ।

4· अलंकार योजना ।

5· छन्द योजना ।

6· काव्य रूप ।

अब एक-एक उपकरण हो क्रमशः लेने से कवयित्री दिनेश नंदिनीजी के "हिरण्यगर्भा" इस काव्यों के शिल्प पर विस्तृत प्रकाश पड सकेगा।

4·1 भाषा :-

रचनाकार भाषा के माध्यम से ही अनुभूत सत्य का सप्रेषण करता है। अभिव्यक्ति में भाषा की उपादेयता को नकारा नहीं जा सकता। भाषा जहाँ अभिव्यक्ति संप्रेषण में सहायता करती हैं वहीं रचनाकार की अभिव्यक्तिक क्षमता का परिचय भी देती है किसी कवि के काव्य के अध्ययन में उसकी भाषिक क्षमता का आकलन अपेक्षित होता है क्योंकि भाषा के माध्यम से ही कवि अपनी अनुभूतियों से साक्षात्कार कराता हैं। किसी भी स्थिति में भाषा और अनुभूति के पारस्परिक सम्बन्ध को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। डा·रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार-कृतिकार के नवीनतम विकास की दिशाएँ प्रमुख रूप से उसकी भाषा प्रयोग विधि में प्रति फलित होती है। साथ ही भाषा के माध्यम से किसी रचनाकार की भी परीक्षा अपेक्षा तटस्थ और विश्वसनीय ढंग से की जा सकती है।[2]

कवि की विचारधारा, परिवेश और मूल-चेतना का प्रभाव भाषा पर पडना स्वाभाविक है। इसतरह दिनेश नंदिनीजी के काव्य भाषा में सर्वत्र उनके व्यक्तित्व का प्रभाव स्पष्ट झलकता है। इनके काव्यों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है

कि इनकी भाषा प्रायः सरल, सहज और व्यावहारिक है जिसे समझने में पाठक को कोई कठिनाई नहीं होती।

प्रत्येक कवि शब्दों को काँट-छाँटकर भाषा के स्वरूप को निखारने की कोशिश करता है, किन्तु भाषा की जीवन्तता के लिये कवि के जीवन में संघर्ष की उपस्थिति अनिवार्य होती है। संघर्ष के कारण ही दिनेश नंदिनीजी के भाषा में एक अनुठा तेवर उपलब्ध होता है, जो उनके अभिव्यक्ति को प्रखरता तो प्रदान करता ही है, साथ ही उनके काव्य में विशिष्टता की सृष्टि भी करता हैं।

कवयित्री की भाषा की विशेषता यह भी है - उसकी विषय एवं भाव की अनुरूपता। सामान्य विषय के उल्लेख में उनकी भाषा भी सामान्य व्यावहारिक रहती है, लेकिन जहाँ वे गूढ दार्शनिक विषयों की चर्चा करती हैं, तो भाषा भी वैसी ही गंभीर और अर्थ पूर्ण हो जाती हैं दार्शनिकता के अधिक्य के कारण उनकी भाषा भी सर्वाधिक कठिन और अर्थगांभीर्य से पूर्ण है।

भाषा के सजीवता और व्यावहारिकता की वृध्दि के लिए कवयित्री ने एक ओर तो आँचल, खुशबू, कुटिया, छज्जा, छलल-छलल, जहर, कटार, उम्मीद, पहरा, औसनियाँ और कसमे-साथे जैसे देशज शब्दों का प्रयोग किया है और दूसरी ओर उस में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी समावेश किया हैं।[3] श्रीमती दिनेश नंदिनीजी ने अपने साहित्य में लक्षणा और व्यंजना से सजी ऐसी भाषा को लिया जो उनके सुक्ष्म और सांकेतिक भावों को व्यक्त करने में समर्थ हो सकें। इसीप्रकार सजीव दृश्यांकन में भी श्रीमती दिनेश नंदिनीजीनें बहुत कुशल हैं। कल्पना की गहराइयों में उतरकर और भावानुरूप ध्वन्यार्थक शब्दों के प्रयोग द्वारा वे दृश्य एवं वातावरण के सुन्दर चित्र अंकित कर देती हैं।

"हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह में सूक्तियां और सुभाषित भी बहुत मिलते हैं जो एक ओर तो भाषागत सौन्दर्य को बढाते है और दूसरी ओर इन काव्यों की अर्थवत्ता के सूचक होने के कारण जीवन के प्रति कवयित्री के गम्भीर दृष्टिकोण और सूक्ष्मानुभूति का भी संकेत देते हैं - कुछ उदाहरण इस प्रकार है -

अ· तब ।
इस पर्ण-कुटी में कातर
मैं अकेली ही घिर जाती
जलती हुई बाहर-भीतर
इन नयनों की वाणी
तब भी
समझ नहीं पाती .....[4]

ब· खिडकी के सहारे खडी
आग और पानी के बीच की
पतली रेखा पर
नगीने - सी जड़ी
अँधेरी गुफा में
जलती
अकेली मशाल ।[5]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कवयित्री की भाषा बहुत सशक्त है, क्योंकि उसमें भावानुरूप विविधता भी है और व्यंजनात्मक सामर्थ्य भी। हिन्दी-उर्दू के मधुर सम्मिश्रण, कल्पना के सहयोग से वह इतनी भावपूर्ण, मनोरम एवं आकर्षक हो गई हैं कि उसमें कही-कहीं उपलब्ध वाक्यगत शिथिलता खटक नहीं पातीं।

कवयित्री दिनेश नंदिनीजी ने कभी शब्दों का प्रयोग सायास नहीं किया। अनायास रूप में जो शब्द अभिव्यक्ति की दृष्टि से उन्हें सहज लगे उन्हें ही अपने काव्य में उन्होंने स्थान दिया है। इतर भाषाओं के शब्दों का प्रयोग उनके काव्य को विशिष्टार्थ व्यंजक बनाता है। इन शब्दों के प्रयोग से उनके काव्य में एक अनूठी अनगढ़ता का समावेश हो गया है जो उनकी काव्य को अति संवेद्य बनाता हैं। अक्षांस, जूही, कट, स्वाँग, पैंसी आदि अंग्रेजी शब्द उनके काव्य में सहज भाव से प्रयुक्त हुये हैं यथा दृष्टव्य हैं कुछ पंक्तियाँ जिनमें अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग दृष्टिगत होता हैं -

अ· तुम मेरे कट-फटे घावों को
किसी जंग खायी सूई से सीते हुए -
जब कि मैं महाकाव्य के मंदिर में
स्वयं को राख-सी समर्पित किये
जाग - सो रही हूँ।[6]

ब· "इसमें
तुम्हारे मन का स्वाँग भरना
मनाने को
तुम्हारी राह जोडती ।"[7]

उसी तरह दिनेश नंदिनीजी ने अपने काव्यों में उर्दू शब्दो में जैसे-गाज, आँच, पल्लू, पैगाम, सफर, दरवाजा, सरहद्द, कापी, साँझ, मनौतियाँ, काबा, सौगंध, निशान, देहरी, दरिया, इबारत, कोख, खूँखार, चिनगारी, आदमखोर आदि शब्दों को प्रस्तुत किया हैं। वैसे ही अरबी फारसी के शब्दों का भी इस्तेमाल "हिरण्यगर्भा" की कविता में कही-कहीं दिखायी देता हैं ।

जैसे - "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह में "रूदन के वर्णाक्षर" कविता में कवयित्री ने अपने आत्मा की जो अतृप्तताएँ, इच्छा की जो अपुर्णताएं है, उसे वाणी देकर स्पष्ट किया है। कवयित्री की अतृप्तता यह है कि वह अपने चेहरे पर मुस्कान ढूँढने का प्रयत्न करती है, वह मुस्कान तो उसे नहीं मिलती परन्तु उस मुस्कान की जगह कवयित्री को आँसुओं के हार मिले जाते है। तब उसके अतृप्तता के स्वर निकल पडते हैं।

"इस इबारत को
अपनी आँखों पढ़ती मैं
किन्ही आदिम संकेतों तक पहुँच रही हूँ
और मेरी कोख की गुहा के मुहाने पर
अँधेरे का दरिया
चिंघाड रहा हैं ....."[8]

कथ्य के अनुसार दिनेश नंदिनीजी ने नये विशेषणों की सर्जना भी की है। इन विशेषणों के माध्यम से दिनेश नंदिनीजी ने अपनी अनुभूती को नयी अर्थवत्ता दी है। रक्त-रंजित, चरण स्पर्श, आश्वासनों के अक्षर, मानव आकृतियाँ, चंदन-चर्चित, चितवनें, रेशमी बातें आदि शब्द प्रयोग उनकी सृजन क्षमता के परिचायक हैं।

दिनेश नंदिनी के भाषा की सब से बडी खूबी उसकी सजीवता है। सजीव चित्रांकन के लिये दिनेश नंदिनीजी ने अनुकरणात्मक शब्दों का भी प्रयोग किया है। अनुकरणात्मक शब्द सम्पूर्ण वातावरण को बिल्कुल प्रत्यक्ष कर देते हैं। प्रस्तुत हैं "रूदन के वर्णाक्षर" में अतृप्तता का स्वर -

"गरूड़ के पखों पर उड़ती
रात की सिसकियाँ
दिशाओं मे गूंज रही हैं।"[9]

विशिष्ट शब्दो की पुनरावृत्ति दिनेश नंदिनी का निजी वैशिष्टय् है। जैसे-

"मुक्त कब हुई ?
राग से
पराग से
खुशबू से
छंद से
जीवन से
मौत से
मैं मुक्त कब हुई ?"[10]

मुहावरों और लोकोक्तियों का संतुलित प्रयोग भाषा की गरिमा के साथ अभिव्यक्ति की संप्रेषणीयता में प्रखरता को नियोजित करता है। क्षीण हो जाना, हृदय में धारण करना, दुशाला ओढ लेना, प्राणों को दीये सा सजाना, परस्पर उलझ जाना, काँप-काँप जाना, गणित करना आदि मुहावरों के प्रयोग ने दिनेश नंदिनीजी के कविताओं को सहजताप्रदान की है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया का "हिरण्यगर्भा" यह काव्य संग्रह भाषा कि दृष्टि से दर्शन और अध्यात्म के आवरण में वही याचक-मुद्रा, वही मांसलता, और वही भावुकता है। रस-व्यंजना के उपरान्त भाषा शैली की दृष्टि से कविताओं का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इनकी भाषा प्रायः सरल, सहज और व्यावहारिक है जिसे समझने में पाठक को कोई कठिनाई नहीं होती, लेकिन कहीं-कहीं कुछ काव्य ऐसे भी हैं जहाँ वह अत्याधिक काव्यमयी ओर अलंकृत हो गई हैं। उनके काव्यों में छायावादी अन्य कवियों कि तरह लाक्षणिक दृष्टि का कहीं-कहीं अनुकरण अवश्य मिलता है। उन्होंने अपनी मौलिक चेतना के अनुसार उदात्त कल्पना के आधार पर सूक्ष्म चित्र प्रस्तुत किए है। इनकी भाषा में एक ओर लाक्षणिक तथा व्यंजना के प्रयोगो से भरी है, दूसरी ओर अभिधा के प्रयोग भी बडे मादक बन पडे है। इसी प्रकार चित्रात्मक प्रवृत्ति के अनुसार दिनेश नंदिनी ने अपने कविताओं में विषयानुरूप शब्दावली का भी चयन किया है। अन्ततः श्रीमती दिनेश नंदिनी के उपर्युक्त सर्वांगीण विश्लेषण के उपरान्त उनका काव्यसंग्रह भाव तथा अभिव्यंजना दोनो ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। भाषा की दृष्टि से भावानुरूप परिवर्तनशील, कोमल, मधुर एवं कटुतिक्त भावनाओं की व्यंजना इनके काव्यों में दिखायी देती हैं। तथा हिन्दी-उर्दू के विशिष्ट शब्दों के सम्मिश्रण से निर्मित भाषा के प्रयोग द्वारा उनके कविताओं का कलात्मक सौन्दर्य और भी बढ़ गया है।

4·2 बिम्ब विधान :-

आधुनिक छायावादी काव्य अपनी उत्कृष्ट बिम्ब योजना के लिए अत्यंत प्रसिध्द है।बिम्ब योजना की प्रवृत्ति साहित्य में अति प्राचीन काल से देखी जा सकती है। आदिकाल से लेकर आधुनिक युग तक जो भी साहित्यिक धारा प्रवाहित हुई, उससे स्पष्ट है कि कवयित्री ने अपनी कल्पना के अनुसार अनेक अप्रस्तुतों के आधारपर प्रस्तुत भाव व्यापार को अत्यंत रमणीय अभिव्यक्ति प्रदान की है। यही अभिव्यक्ति बिम्ब प्रतिबिम्ब की दृष्टि से अनेक रूपात्मक हैं। डॉ·कुमार विमल के अनुसार "कवि की सौन्दर्य चेनता से सम्बध्द सभी उत्कृष्टताएँ और विकृतियाँ उसके बिम्ब विधान में परिलक्षित होती है। बिम्बों के द्वारा कवि अपनी अनुभूतियों, भावो ओर कल्पित

छवियों को चित्रित करता है। इन बिम्बो की सुषमा और सन्निबहुता योजित वस्तु विशेष के आसन्न सम्बन्धों तथा तद्प्रसूत भाव संवेगों की अनुकूल अभिव्यक्ति पर निर्भर करती हैं। अतः सफल बिम्ब विधान के लिए प्रथम कोटि की औपम्य विधायिनी प्रतिभा की आवश्यकता होती है। आशय यह है कि बिम्बो के द्वारा कवि केवल वस्तु विशेष को मानसिक पुनः प्रत्यक्ष ही नहीं करता बल्कि उसे किसी गाढ अनुभूति के संदर्भ में लाकर मनोरम बना देता हैं। इस प्रकार वह बिम्ब विधान के द्वारा आश्रय और आलम्बन के बीच भावात्मक एवं वस्तुनिष्ठ सम्बन्धों को रसात्मक प्रशस्ति देता है।[11]

बिम्ब की विस्तृत व्याख्या करते हुए पाश्चात्य विद्वान सिसिल डे ल्यूइस ने कहा है - "यह एक ऐसा ऐन्द्रिय-शब्द-चित्र है जो कुछ अंशो तक अलंकार पूर्ण अथवा लाक्षणिक होता है। जिसके संदर्भ में मानवीय संवेदनाएँ निहित रहती हैं तथा जो पाठक के मन में विशिष्ट रागात्मक भाव उद्दीप्त करता है।[12]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल काव्य की बिम्बात्मक प्रवृत्ति के सम्बन्ध में लिखते है - "बिम्ब ग्रहण वहीं होता है। जहॉ कवि अपने सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा वस्तुओं के अंग-प्रत्यंग, वर्ण आकृति तथा उनके आस पास की परिस्थिति का परस्पर संश्लिष्ट विवरण देता है। बिना अनुराग के ऐसे सूक्ष्म ब्यौरोपर न दृष्टि जा ही सकती है, न रम ही सकती हैं।"[13]

अस्तु, बिम्ब से तात्पर्य - "किसी वस्तु की प्रतिच्छाया अथवा झलक" से है। अर्थात जब कवि अपनी रचना द्वारा किसी वस्तु का एक ऐसा सजीव चित्र अंकित कर देता है कि वह पाठक की सूक्ष्म दृष्टि में मूर्तिमान हो उठे, तो वही बिम्ब-ग्रहण-व्यापर होगा। डा॰नगेन्द्र बिम्ब को इमेज का रूपान्तर मानते हैं।

बिम्ब का स्वरूप स्पष्ट करने के पश्चात उसके प्रकारों का प्रश्न उठता है, यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो बिम्ब के विभाजन के अनेक आधार हो सकते है, किन्तु डा॰नगेन्द्र के अनुसार "बिम्ब के सामान्यतः दो रूप है - एक वस्तुगत रूप जिसका सम्बन्ध शरीर विज्ञान से है और भावगत रूप जो मुख्यतः मनोविज्ञान

का विषय है।" अतः ऐन्द्रिक आधार बिम्ब के अन्तर्गत प्रमुख हैं, जिसके आधार पर बिम्ब को पॉच भागों मे विभाजित किया जा सकता है - दृश्य, श्रव्य, स्पृश्य, घ्रातव्य और रस्य आ आस्वादय।[14]

इसप्रकार उपर्युक्त अभिमतों से स्पष्ट है कि बिम्ब का मूल आशय चित्रात्मकता से है। यह भी कहा जा सकता है कि बिम्ब वह शब्दचित्र है जो भाव को पूर्ण सजीवता के साथ पाठक के सामने प्रकट करता है। बिम्बों का सार्थक और सफल प्रयोग कवियों के शिल्प कौशल को प्रत्यक्ष करता है। बिम्ब की दृष्टि से दिनेश नंदिनीजी का "हिरण्यगर्भा" यह काव्यसंग्रह अत्यन्त समृध्द है। उनके काव्यों में बिम्बों का वैविध्य दृष्टिगत होता है। इस काव्यसंग्रह में कवयित्री ने अपने व्यक्तिगत जीवन के विविध आयामों को प्रस्तुत किया हैं। इनकी कविताओं में आधुनिक युग और जीवन से सम्बन्धित बिम्बों का प्राचुर्य मिलता है। दिनेश नंदिनी ने "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह में अपनी आत्मपीडा, विवशता, अतृप्तता, अंतर्द्वन्द को स्पष्ट किया है, साथ ही उनके कविताओं में नारी मन का अंतर्द्वन्द तो प्रमुख है ही, किन्तु एक विशेष वर्ग के जीवन परिवेश का भी अत्यन्त प्रामाणिक और प्रभावी चित्रण दिसायी देता है। दिनेश नंदिनी डालमिया ने प्रेमजीवन, वैवाहिक जीवन की विडंबना, विरह वेदना, विफल प्रेम, नश्वरता का एहसास, घुटन, बंधमुक्ती का प्रयास, अपेक्षाभंग, संयोग का प्रतीकात्मक वर्णन, पश्चाताप आदि अनेक विषयों को अपने काव्यों में स्थान दिया हैं।

"हिरण्यगर्भा" में कवयित्री दिनेश नंदिनी के भावों का प्रस्फुटन प्रकृति को साथ लेकर यदि कहीं हुआ हैं, तो वहा मनस्थितियों का साम्य देखा जाता है। "प्रतीक्षा में पनिहारिन" कविता में कवयित्री ने अपने प्रियतम की प्रतिक्षा का बिम्ब प्रस्तुत किया है।

"तालाब के तीर पर
मेरा भरा रखा घड़ा
पानी में झिलमिला रहा है मेरे साथ
डूबते सूरज की साक्षी में

लंबी होती परछाइयाँ परस्पर उलझ रही है।

किसी भ्रम में।"[15]

उपर्युक्त अंश में कवयित्री ने घडे की परछाइं और कवयित्री की अपनी परछाइं की तुलना तालाब में डूबते हुए सूरज की साक्षी में कि हैं। इस प्रकार कवयित्री ने घडा और तालाब के मूर्त बिम्ब के माध्यम से प्रतीक्षा को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

4·2·1 गत्यात्मक बिम्ब :-

गत्यात्मकता दिनेश नंदिनीजी के काव्य का विशिष्ट गुण है। गति का सम्बन्ध सजीवता से होता है। दिनेश नंदिनीजी का सजीव चित्रांकन उनके गत्यात्मक बिम्ब को सशक्तता का परिचय देता है। "सलाखो-पुरे स्वर" कविता के द्वारा जीवन की विवशता की यात्रा का गत्यात्मक बिम्ब यहाँ दृष्टव्य है।

"अनंत यात्रा पर निकला हुआ

प्रेम पाखी

आगम से आ

निगम की ओर जाता

अरूप । कितना अतुल रूप ।

यादों में बसा रक्त कमली·····"[16]

एक अन्य उदाहरण है जिसमें कवयित्री ने प्रेम के पक्षी द्वारा चिंतनात्मक रहस्य की गत्यात्मकता को प्रकट किया है।

"आगम की दिशा से आकर

निगम की दिशा में जाने वाला पक्षी प्रेम है।"[17]

4·2·2 ध्वनि बिम्ब :-

दिनेश नंदिनीजी ने अपने काव्य में ध्वनि बिम्बों की सुन्दर नियोजना की है। यथा दृष्टव्य है उदाहरण जिसमें कवयित्री ने खनखना शब्द की ध्वन्यात्मकता "आँखो में मचलती अलकनंदा" इस कविता में प्रस्तुत की है। इस में उन्होंने अपनी

विरहता का दर्शन किया हैं ।

"इन, जोडे हुए दुखों का क्या ढोंग करूँ
यात्रा के पड़ाव पर
उल्लास के मंदिर में
माथा टेकने के पूर्व ही
वे खनखना कर बिखर जायेंगे।"[18]

इसी प्रकार "उफनते समुद्र तट पर" कविता की निम्न पक्तियाँ दिनेश नंदिनी के ध्वनि बिम्ब की उत्कृष्टता का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं ।

"मेरे दरवाजे के बाहर
छज्जे के नीचे
नन्ही बालिका की तरह
वर्षा हो रही है
छोटे-छोटे नाले-नदियों में
छलल-छलल दौड रही है..."[19]

इस पंक्तियों में प्रयुक्त छलल-छलल शब्द अपनी ध्वन्यात्मकता के माध्यम से वातावरण की विशिष्टता को प्रकट करने में पूर्ण सक्षम हैं।

4·2·3 भाव बिम्ब :-

श्रीमती दिनेश नंदिनीजी ने काव्य में विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति के लिए भाव बिम्बों का आश्रय ग्रहण किया। जीवन-जगत की पीडा और वेदना के चित्रांकन के कारण दिनेश नंदिनी के काव्य में करूण, विषादि, बीभत्स, उत्साह। भयानक आदि बिम्बों की सफल नियोजना मिलती हैं। इसी प्रकार इनके चित्र यहाँ दृष्टव्य हैं।

1· करूण :-

"धूप बत्तियों से धुँधलाया तैलचित्र" इस कविता में कवयित्री ने नश्वरता का एहसास प्रकट किया है इसमें उनका करूण भाव दिखायी देता हैं।

अ· "उस चित्र लिखो युवती - का चेहरा
निश्चय ही मेरा नहीं
जाने क्यों
समवेत स्वर कहते हैं : वह और कोई नहीं
सिर्फ मैं हूँ : मैं ही हूँ
क्यो कि ऐसा कोई नहीं
तीसरा नहीं ।"[20]

"एक नींद आग रहित" इस कविता में भी कवयित्री का करूण भाव दिखायी देता है।

"अनसुनी कहानी,
सुनो ।
और मुझे मेरे "मैं" से
मुक्त करो ।"[21]

2· <u>विषाद</u> :-

"छत के टँकी आँखे
आँसू के आईनो में
झूल आये फाँसी के फंदे
पैरो से जडें काटी थी
मिट्टी से मिट्टी
पाटी थी।"[22]

3· <u>बीभत्स</u> :-

कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया के "महावासना का मंत्र।" इस कविता में वीभत्स भाव दिखायी देता हैं -

कर्ण के प्रति
क्षणिक वासना की पवन ने

द्रुपद सुता को छुआ,
उसके पातिव्रत्य का प्रकाश
निमिष भर के लिए क्षीण हो गया।"[23]

"रूदन के वर्णाक्षर" इस कविता में भी कवयित्री दिनेश नंदिनी ने वीभत्स भाव प्रकट किये हैं ।

"इस इबारत को
अपनी आँखों पढ़ती मैं
किन्ही आदिम संकेतों तक पहुँच रही हूँ
और मेरी कोख की गुहा के मुहाने पर
अँधेरे का दरिया
चिंघाड रहा है ...."[24]

4· <u>उत्साह</u> :-

आधुनिक कवयित्री दिनेश नंदिनी के "हिरण्यगर्भा" इस काव्य संग्रह में कवयित्री की सतत काव्य साधना और गहन जीवन अनुभूति होने के कारण इस में उत्साह भाव अधिक नहीं दिखायी देता। फिर भी "प्राणों को दिये सा सजाए" इस कविताम्रेंकवयित्री का उत्साह भाव दिखायी देता हैं -

"तुम मेरे लिए
बहार में
असमय सूखते बेल-गुलाब हो
एकाकी खडे हुए
कोरे पृष्ठों पर....."[25]

5· <u>भयानक</u> :-

"रक्त रंजित पल्लू" इस कविता में कवयित्री दिनेश नंदिनीजी ने मुक्ति की चाह प्रस्तुत की है। यह कविता पढने से ऐसा महसूस होता है कि कवयित्री जीवन में डरावनी आवाजों को सुनकर भयभीत और घायल हो गई हैं।

इसतरह इस में भयानक भाव दिखायी देते हैं।

"किन्हीं डरावनी आवाजों से भयभीत
और घायल
भूखी और निराश
अपनी नारी गंध को छिपाये
आदमखोर पहाडियों की तलह टियो को
लाँघ जाना चाहती है
रातों रात .....।"[26]

4·2·4 दृश्य बिम्ब :-

श्रीमती दिनेश नंदिनी के काव्य में दृश्यात्मक बिम्ब अधिक दिखायी देते हैं। जिस प्रकार चक्षुरूपी इन्द्रिय हृदय को सर्वाधिक संवेदित करती है। डा·नगेन्द्र इसकी महत्ता को स्वीकार करते हुए कहते है - "इनका स्वरूप सबसे अधिक स्पष्ट होता है क्यों कि उसके आयाम अधिक मूर्त होते है, यही कारण है कि ऐसे अनुभव के लिए जिसमें किसी इन्द्रिय का सीधा सन्निकर्ष होता है प्रत्यक्ष विशेषण का प्रयोग भी किया जाता है और जीवन तथा काव्य में दृध्य बिम्बों का प्रयोग सर्वाधिक होता है।"[27]

"प्रतीक्षा में पनिहारिन" इस कविता में कवयित्री ने अलंकारिक प्रवृत्ति के साथ दृश्यात्मक बिम्ब प्रकट किये हैं।

"तालाब के तीर पर
मेरा भरा रखा घडा
पानी में झिलमिला रहा है मेरे साथ
डूबते सूरज की साक्षी में
लंबी होती परछाइयाँ परस्पर उलझ रही है
किसी भ्रम में।"[28]

एक अन्य चाक्षुष बिम्ब का उदाहरण "झूठ कहते - कहते" शीर्षक कविता में कवयित्री दिनेश नंदिनी ने दिया है। जो बिम्ब कौशल को पूर्णता से प्रत्यक्ष करता हैं ।

"हलदिया हथलियो से
आयास ही छूट कर
फूट जाने वाले
पाप-भरे घडों के ठीकरे
अधर - प्रसवित
रंगीन प्रणय के दहकते अंगारे "-[29]

4·2·5 स्पर्श बिम्ब :-

स्पर्श की संवेदना को व्यक्त करने वाले बिम्ब को स्पर्श बिम्ब की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। स्पर्श की अनुभूति ऐन्द्रिक है तथा वह अत्यन्त भावात्मक क्षणों में होती हैं। दिनेश नंदिनी के काव्यों में एक ओर तो दार्शनिक प्रवृत्ति का सहज आगमन है, तथा दूसरी ओर सहज अभिव्यक्ति के साथ सूक्ष्म सृष्टि से सम्पन्न चित्रात्मकता, इसलिए उनके काव्य में सहज भावना के अनुरूप स्पर्श बिम्ब दिखायी देते हैं।

"मूर्ति और मूर्तिकार" इस कविता के द्वारा कवयित्री दिनेश नंदिनीजी ने अपने विफल प्रेम का चित्रण स्पर्श बिम्ब के द्वारा किया हैं।

"आँचल में बँधे
सूरज की किरणों से
उसके हाथ धुलाये
रूप की छैनी को
"काबा" की सिध्द
अधर-चुम्बित शिला पर रगड
पैना बनाया।
स्पर्श पाते ही
ताप से जल उठीं
उँगलिया तक मेरी"[30]

"प्रतीक्षा में पनिहारिन" इस कविता में भी कवयित्री दिनेश नंदिनीजी ने स्पर्श बिम्ब का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

"मेरे पाँव पानी में लटक रहे हैं
मछलियाँ उनसे बार-बार टकरा रही हैं
किसी भ्रम में....."[31]

4·2·6 शब्द बिम्ब :-

शब्दों के माध्यम से सृजित बिम्ब को शब्द बिम्ब की संज्ञा दी है। दिनेश नंदिनी ने अपने काव्यों में शब्द बिम्ब की संज्ञा दी हैं।

"मुक्त कब हुई ?
राग से
पराग से
खुशबु से
छंद से
जीवन से
मौत से
मैं मुक्त कब हुई ?"[32]

4·2·7 रस बिम्ब :-

अनुभव को स्वादगत प्रतिक्रिया के रूप में अभिव्यक्ति करने वाले बिम्ब को रस बिम्ब कहते हैं। "रात भर" इस कविता में रस बिम्ब दिखायी देते हैं।

अ· "रात भर -
रूदन की कंदरा के मुस्कानें ढूँढती
आँसुओं के हार बनाती रही
रात भर ...."[33]

अ· "रूदन के वर्णाक्षर" कविता में चित्रित रस बिम्ब -

"सूखी नदी का दर्द
मेरी कोख में समा कर
अहिल्या-सा पत्थरा गया हैं"।[34]

4·2·8 गन्ध बिम्ब :-

घ्राण संवेदना के आधार पर अपने वैवाहिक जीवन की विडंबना का चित्रण गन्ध बिम्ब के अन्तर्गत आता है। गन्ध शक्ति पर आधारित बिम्ब दिनेश नंदिनी की सहज और सार्थक संवेदना का परिचय देते है। "चिरसुहागन" इस कविता में गन्ध बिम्ब दिखायी देता है ।

अ· तुम मेरे कट - फटे घावों की
किसी जंग खायी सूई से सीते हुए -
जब कि मैं महाकाल के मंदिर में
स्वयं को राख-सी समर्पित किये
जाग-सो रही हूँ - [35]

ब· "सत्य।" इस कविता में कवयित्री ने पश्चतावा व्यक्त किया है।

"मनुष्य ने
अपने अंधेपन को
छिपाने के लिए
सत्य के पूरे चेहरे को
आंशिक सत्यों से ढँक दिया "[36]

4·2·9 मिश्रित बिम्ब :-

एक से अधिक ऐन्द्रिय संवेदना को एक साथ अभिव्यक्त करने वाला बिम्ब मिश्रित बिम्ब कहलाता है। ऐसे बिम्ब दिनेश नंदिनी के काव्य में अत्यन्त अल्प मात्रा में मिलते हैं। प्रस्तुत है रस, गन्ध, स्पर्श तथा शब्द की मिश्रित संवेदना को प्रत्यक्ष करनेवाले मिश्रित बिम्ब का उत्कृष्ट उदाहरण -

"प्रतीक्षा तुर ठिठकी लहर" इस कविता का उदा ·-

अ· तुम्हारा अभियोग
प्रेत बन कर कस रहा है अपनी जकड़न
तोड़ रहा है मेरा मन, बल, आत्मा
और मैं कही अपने भीतर
अपने को खोजती - ढूँढती
कि मैं कौन हूँ -
प्रेत -बाधित वृक्ष के नीचे की
सुनसान बावड़ी
बावडी का परित्यक्त जल
जल की प्रतीक्षातुर ठिठकी कोई लहर ?"[37]

4·2·10 स्मृत्यात्मक बिम्ब :-

स्मृति पर आधारित होने के कारण इसे स्मृत्यात्मक बिम्ब कहते है। इसमें वगत जीवन से सम्बन्धित अनुभूतियों का चित्रांकन किया जाता है। "धूप बत्तियों से धुँधलाया तैलचित्र" इस कविता में कवयित्री के स्मृति चिन्ह दिखायी देते हैं। दिनेश नंदिनी के काव्य का परिवेश रहस्यात्मक होने के कारण स्मृत्यात्मक बिम्ब की सृष्टि उनके काव्य में अत्यन्त स्वाभाविक रूप से हुई है। जैसे -

अ· "गोल कमरे मे
एक चित्र टँगा हैं
जाने कब से

मेरे आने से पहले भी
वह था
मेरे जाने के बाद भी
वह रहेगा"[38]

ब· "मेघो की रहस्य परतों मे
लुकती - छिपती रात
जैसे धूप - धूले दिन को देखती
ठिठकती है
हथेली पर प्राणों को दीये - सा सजाए "[39]

प्रथम उध्दरण में कवयित्रों ने "नश्वरता का एहसास" व्यक्त करते हुये कहा है कि मेरे कमरे में एक ऐसा चित्र लटकाया गया है, वह चित्र मेरे जैसा हि है वह चित्र मेरा न होकर भी बाकी सब लोग कहते है कि वह चित्र किसी और का नहीं तुम्हारा ही है, इसलिए यहाँ अलंकारिक प्रवृत्ति के साथ स्मृत्यात्मक बिम्ब प्रकट हुआ हैं। द्वितीय उदाहरण में "प्राणों को दिये सा सजाए" इस कविता में दिनेश नंदिनी के मेघ की रहस्यात्मक घटना को पढ़ने से उसमें स्मृत्यात्मक चिन्ह दिखायी देते हैं ।

4·2·11 <u>द्वन्द्वात्मक बिम्ब</u> :-

द्वन्द दिनेश नंदिनी के जीवन का पर्याय माना जा सकता है। परस्पर विरोधी अवधारणाओं तथा विचारधाराओं का द्वन्द उनके काव्य में स्पष्ट दिखायी देता है। अनुभूति की द्वन्द्वात्मकता ने उनकी शब्द भंगिमा को भी द्वन्द्वात्मक बना दिया है। प्रस्तुत है द्वन्द की व्यंजित करने वाला एक चित्र जो सृजन प्रक्रिया के संघर्ष को स्पष्ट करता हैं -

"सृजन सत्य" इस कविता में कवयित्री दिनेश नंदिनी का द्वन्द्वात्मक बिम्ब दिखायी देता हैं।

"अच्छा किया
या बुरा
नहीं जानती ।
पर माँ न होते हुए भी
मेरे सत्य ने मातृत्व को अर्थ दिया
सृजन-प्रक्रिया से न गुजरी, सही

मिटते हुए
तुम्हारे लिए
सृजन - सत्य का
वरण किया है।" [40]

दिनेश नंदिनी की छायावादी प्रवृत्ति ने उनके काव्य में एक ओर तो दार्शनिक प्रवृत्ती तथा दूसरी ओर सहज अभिव्यक्ति के साथ सूक्ष्म-दृष्टि से सम्पन्न चित्रात्मकता की प्रवृत्ती सम्बन्धी बिम्बों की सर्जना में अनुठा सहयोग दिया है। दिनेश नंदिनी के काव्य में आन्तरिक वृत्ति का परिचय अधिक दिखायी देता है। उनके काव्य में पहाड, पठार, आदि बिम्बों का प्राचुर्य हैं। मानव हृदय की दुरूहता ओर उसमें अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित वर्षा के नयें पानी को स्पष्ट करने के लिये दिनेश नंदिनी पहाड के बिम्ब को माध्यम बनाती हैं -

"अदृश्य के शरीर का सहारा लिया
सौगंधे टूट गयी
वंश-वृक्ष के पत्ते टहनियों से
छूट गये
परछाइयां ऋतुओं के बोझ तले
मुरझाने लगी
गगन की नीलिमा
पगथलियों के नीचे
पीली पडने लगी
समुद्र के गर्भ में
घबराकर
जहरीले फणिधर
पहाडियों की अछूती खोहों में
समा गये
उनके चले हुए पेट के निशान

धो दिया उन्हें वर्षा के नये पानी ने
तब परछाइयों का वह
स्थिर - उदास शहर भी
सरकने लगा
मैं सीमा पर कहीं छूट गयी।"[41]

यह पंक्तियाँ दिनेश नंदिनी के बिम्ब निर्माण कौशल का परिचय देती है। इस में कवयित्री ने अपने अतीत और वर्तमान जीवन के बारे में यथार्थता के साथ अपना नीजि जीवन प्रस्तुत किया हैं। इस कविता में कवयित्री कहती है कि मैं आज जो जीवन जी रही हूँ वह जैसे एक "परछाइंयों का शहर" हैं। मुझे ऐसा लगता है कि मुझे यहाँ किसी ने यहां के सीमा पर चूपचाप छोडा हैं। इस पर-छाइयों के शहर में किसी अदृश्य शरीर ने मुझे अपनाया। इसी वजह से मेरी सब सौगन्धे टूट गयी जो मैने अतीत में ली थी। इस प्रकार अतीत और वर्तमान जीवन के बारे में यथार्थता को प्रकट कर दिनेश नंदिनी ने पाठक के मन में एक विवृत्त बिम्ब की अनुठी सृष्टि को प्रत्यक्ष किया हैं।

श्रीमती दिनेश नंदिनी काव्य में खुशबु प्रणय-निवेदन, करूणा, पीडा, खंडहर, परछाइयाँ, स्मृति, युध्द आदि के बिम्बों की पुनरावृत्ति उपलब्ध होती हैं। इसका कारण स्वयं दिनेश नंदिनी के जीवन से सम्बन्धित घटनाएं है । दिनेश नंदिनी ने अधिकतर लम्बी कविताएँ लिखी है, जिनमें आम आदमी के दर्द को पूरी तीव्रता से उभारा गया है। यही कारण है कि दिनेश नंदिनी का काव्य जन सामान्य की कडवी सच्चाइयों को प्रत्यक्ष करता है। "पीडा" दिनेश नंदिनी का सर्वाधिक काव्य में दिखायी देनेवाला बिम्ब है, जो अवचेतन मानस की जटिलताओं से परिचित कराता है।

दिनेश नंदिनी की बिम्ब योजना ने उनके काव्य को एक ऐसा दस्तावेज बना दिया है जो वर्तमान युग की सच्चाई और आम आदमी की विवशता को पूरी शिद्दत से प्रत्यक्ष करता है। उनके द्वारा प्रयुक्त प्रत्येक बिम्ब ने उनके काव्य को अधिक स्पष्ट और सुदृद बनाया है। उनके काव्य में ऐसे अनेक बिम्ब मिलते है

जो आत्म मंथन के फलस्वरूप उनकी काव्य चेतना पर अनायास ही छा गए तथा जिनके माध्यम से उन्होंने अपने जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्ति देने में सफलता पायी है। इन्हीं बिम्बों के माध्यम से उनकी काव्य संवेदना का भाषिक रूपान्तरण अत्यन्त प्रखर ओर सौष्ठव पूर्ण बन सकता है।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि दिनेश नंदिनी का समूचा "काव्यसंग्रह" बिम्बों से ओत-प्रोत है। "सृजन का सत्य" उनके काव्य का प्राण है। उनके काव्य में बिम्बों के विविध प्रकारों का सम्यक ओर अनुपातिक समन्वय परिलक्षित होता है। उनके बिम्ब केवल सजीव चित्र ही उपस्थित नहीं करते अपितु युगीन परिवेश के प्रति तीखा व्यंग्य भी करते है। इस काव्यसंग्रह में कवयित्री ने अपने व्यक्तिगत जीवन के विविध आयाम दिनेश नंदिनीजी बिम्बों के माध्यम से ही जीवन्त रूप में कर सकी है। उनकी बिम्ब योजना उनके काव्य को एक ऐसा अनुठा उत्कर्ष प्रदान करती है, जो नयी कविता के अन्य हस्ताक्षरों से उन्हें अलग कर शीर्ष स्थान का अधिकारी बनाती है। अपनी बिम्ब योजना के माध्यम से दिनेश नंदिनी वर्तमान के सत्य को उजागर करने में पूर्ण रूपेण सफल हुयी है। उनके बिम्बों की विविधता उनके शिला पक्ष की उत्कृष्टता को प्रमाणित करती हैं।

4·3 प्रतीक योजना :-

गीता रहस्य के अनुसार - "संस्कृत के प्रति उपसर्ग से प्रतीक की व्युत्पत्ति हुई हे जो संज्ञा के साथ प्रयुक्त हो असाम्यमूलक तथा साम्यमूलक अर्थ को स्पष्ट करता है।"[42] डिक्शनरी ऑफ वर्ल्ड लिटरेचर के अनुसार - "प्रतीक ऐसी प्रेषण प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रस्तुत सत्य के आधार पर किसी समतुल्य अप्रस्तुत सत्य का प्रत्यक्षीकरण होता हैं।"[43]

प्रकारान्तर से हम कह सकते है कि प्रतीक के माध्यम से ही मानव का सारा व्यापार क्रिया-कलाप सम्पादित होता है। प्रतीक से ही अभिव्यक्ति सम्प्रेषण में तीव्रता आती है। कवियों के लिए विषय के अर्थ और व्यंजना की दृष्टि से प्रतीकों की अनिवार्यता मूल आवश्यकताओं की तरह होती है क्यों कि बिना सम्यक प्रतीकों

के समुचित प्रयोग के वे कथ्य और भाव को सशक्त रूप से अभिव्यक्त नहीं कर सकते।

अनेक विद्वानों ने प्रतीक के सम्बन्ध में अपने मताभिमत प्रकट किए है। डा॰नित्यानन्द शर्मा के अनुसार - "अप्रस्तुत, अप्रमेय, अगोचर अथवा अमूर्तका प्रतिनिधित्व करने वाले उस प्रस्तुत या गोचर वस्तु विधान को प्रतीक कहते है जो देश काल एवं सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण हमारे मन में साहचर्य के कारण किसी तीव्र आलोचना को जाग्रत करता है।"[44] डा॰राजकुमार वर्मा का अभिमत है - "एक ही शब्द में ही अनेकानेक भावों की अभिव्यक्ति प्रतीक का निर्माण करती है। अरूण शिखा-ध्वनि प्रभात के लिए प्रतीक बन गयी है अथवा अशोक पुष्प जहाँ ऋतु सूचक वहाँ मुग्धा के पदाघात की व्यंजना में भी सार्थक हुआ है। प्रतीक का सम्बन्ध शब्द शक्ति की ध्वनि शैली से है अतः साहित्य में अर्थ की विपुलता के लिए सदैव प्रयुक्त होगा।"[45] आचार्य शुक्ल की मान्यता है - "भावना को मूर्त रूप मे रखने की आवश्यकता के कारण कविता की भाषा में दूसरी विशेषता यह रहती है कि उसमें जाति संकेत वाले शब्दो को अपेक्षा विशेष-रूप व्यापार शब्द अधिक रहते है। बहुत से ऐसे शब्द होते है जिनसे किसी एक का नहीं बल्कि बहुत से रूपों का व्यापारों का एक साथ चलता अर्थ ग्रहण हो जाता है।"[46]

इसप्रकार यह स्पष्ट है कि प्रतीक में एक अनूठी शक्ति सन्निहित रहती है जिसके कारण शब्द विशिष्ट अर्थ बोध का द्योतन करने में सक्षम होते हैं। एक प्रकार से प्रतीक को अभिव्यक्ति का आवश्यक तत्व माना जा सकता है।

भारतीय वाङ॰मय में वैदिक से अद्यतन प्रतीकवाद की स्वस्थ एवं पुष्ट परम्परा उपलब्ध होती है। वेदो में परम शक्ति का प्रतीक प्रकृति को माना है। पुराण उपनिषद, श्रीमद्भागवत, महाभारत, आदि ग्रन्थों में प्रतीकों विधान की अनिवार्यता को मूर्त स्वरूप देते है। सूर का उध्दव गोपी संवाद प्रतीक विधान की सुन्दर नियोजना को प्रस्तुत करता है। इस प्रकार समूचा भारतीय साहित्य प्रतीकवाद की महत्ता और अनिवार्यता को प्रतिपादित करता है। इसलिए साहित्य के अतिरिक्त हमारी संस्कृति, रीति-रिवाजों तथा संस्कारों में प्रतीको का चलन उपलब्ध होता है।

डॉ॰भगीरथ मिश्र ने प्रतीक के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए कहा है - "अपने रूप, गुण, कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत वस्तु, भाव, विचार, क्रिया-कलाप, देश, जाति, संस्कृति आदि का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जाता है, तब वह प्रतीक कहलाता है।" डॉ॰मिश्रजी के कथन द्वारा प्रतीक का स्वरूप पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है। यहाँ विशेष रूप से यह बात भी कथनीय है कि कोई भी प्रतीक बिम्ब के रूप में कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में स्वीकृत किया जाता है। वस्तुतः बिम्ब द्वारा किसी भी वस्तु या पदार्थ का एक साकार चित्र उभरकर या तो हृदय को स्पन्दित करता है अथवा आँखो के सामने मूर्तिमान हो उठता है, जब कि प्रतीक के अन्तर्गत उसका अभाव ही पाया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रतीक अत्यन्त संक्षिप्त रहता है, परन्तु बिम्ब अत्यन्त विवरणपूर्ण होता है, और उपमेय को स्पष्ट करने के हेतु प्रयुक्त होता है। अतः वह अधिक स्पष्ट होता है।

परिभाषा की तरह ही विद्वानों ने प्रतीक के प्रकारों के सम्बन्ध में भी अपने मतभिमत प्रकट किए हैं। श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया के "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह में प्रतीको का प्राचुर्य उपलब्ध होता है, जो उनके काव्य को एक विशिष्ट गरिमा से अभिमण्डित करता हैं। "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह की प्रतीक योजना का अनुशीलन हम निम्न प्रकारों के आलोक मे कर सकते है -

1॰ ऐतिहासिक प्रतीक

2॰ पौराणिक प्रतीक

3॰ प्राकृतिक प्रतीक

4॰ सैध्दान्तिक प्रतीक

प्राकृतिक क्षेत्र से गृहीत प्रतीकों को प्राकृतिक तथा पुराण, इतिहास तथा धर्म से सम्बन्धित प्रतीको को ऐतिहासिक प्रतीक कहा जाता है। इसके साथ ही विज्ञान दर्शन एवं राजनैतिक प्रसंगो से प्रेरित अथवा जिनके अन्तर्गत विज्ञान, दर्शन तथा सिध्दान्तों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति होती है, वे सैध्दान्तिक प्रतीक कहलाते है। इनके अतिरिक्त मानव कृत वस्तु-जगत तथा व्यावहारिक जीवन की दृष्टिसे

प्रतीकों के दो भेद और भी किये जा सकते हैं। श्रीमती दिनेश नंदिनी के "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह में उक्त सभी प्रकार के प्रतीकों की प्राप्ति होती है।

4·3·1 ऐतिहासिक प्रतीक :-

श्रीमती दिनेश नंदिनी ने शिल्प में नवीनता की दृष्टिसे ऐतिहासिक प्रतीको को संजोया है। किन्तु इनका प्रयोग उनके काव्य में कम ही हुआ है। दिनेश नंदिनी ने जहाँ भी ऐतिहासिक प्रतीको का आश्रय लिया है वहाँ उनके काव्य में आत्मपीडा का प्रस्तुतीकरण दिखायी देता है। इस पीडा से मुक्त होने के लिए श्रीमती दिनेश नंदिनी के "महावासना का मंत्र" इस कविता में ऐतिहासिक प्रतीक दिखायी देते हैं ।

अ· "कर्ण के प्रति
क्षणिक वासना की पवन ने
द्रुपद सुता को छुआ,
उसके पातिव्रत्य का प्रकाश
निमिष भर के लिए क्षीण हो गया।"[47]

इसमें कवयित्री ने "द्रौपदी" को प्रतीक मानकर यह भाव व्यंजित करने का प्रयास किया है, कि युगों से नारी कैसे अपमान सहती आयी है, अपनी आत्मपीडा को कैसे सहते आयी है उसका पातिव्रत्य कैसे नष्ट किया जाता था?

एक और अन्य कविता "युध्द संदेश" में भी कवयित्री दिनेश नंदिनी ने ऐतिहासिक प्रतीक को लेकर अपना अंतर्द्वन्द प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत है अंतर्द्वन्द से सम्बन्धित ऐतिहासिक प्रतीक :

ब· "मुझे सूचनाएं नहीं
पनाह दें
युध्द से
युध्द की सूचनाओं से"[48]

कवयित्री दिनेश नंदिनी ने अपने "अंतर्द्वन्द्व" को "युध्द" का प्रतीक लेकर अपनी आत्मा की वाणी से व्यक्त किया है।

4·3·2 पौराणिक प्रतीक :-

कवयित्री दिनेश नंदिनी ने अपने स्वयं के "विफल प्रेम" से सम्बन्धित प्रतीको के चुनाव में विशेष रूप से पौराणिक और धार्मिक क्षेत्रों को ही चुना है।

"मूर्ति और मूर्तिकार" इस कविता को पढने से ऐसा प्रतीत होता है कि कवयित्री अपने विफल प्रेम के कारण स्वयं अपने प्रिय को पौराणिक प्रतीक की उपमा देती है। कवयित्री ने अपने मूर्तिकार को छोडकर, न चाहते हुये भी आकाश में विहार करने लगी और उसकी प्राण-प्रतिष्ठा में प्रतिक्षारत खडा वह मूर्तिकार उसका इन्तजार कर रहा था। कवयित्री चाहकर भी उसे न मिल सकी, इस विफल प्रेम को पौराणिक प्रतीक के माध्यम से प्रस्तुत करते हुये कवयित्री ने लिखा हैं -

"मेरे प्राण
कहीं ऊपर
आकाश में उडते-उडते
और धरती पर
नीचे,
मेरी प्राण-प्रतिष्ठा में प्रतीक्षारत, खडा
वह मूर्तिकार . . ."[49]

एक अन्य उदाहरण में कवयित्री का पुराने खंडहरो से प्रेम दिखायी देता है। "खंडहरो में गूँजती हवा" इस कविता के द्वारा उनका पौराणिक प्रतीको के प्रति प्रेम दिखायी देता है, इस कविता के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन का सफर और पुराने खंडहरों का सफर इसकी तुलना की है।

"पुराने खंडहरों का
ठूँठ सफर कर,
घन घोर घटाएँ
लिपटती है मुझ से "[50]

इसीतरह "रूदन के वर्णाक्षर" इस कविता में अहिल्या का प्रतीक यह संकेतित करता है कि जिस तरह उस युग में अहिल्या ने सब दुःख दर्द सहकर वह पत्थर बन गयी है। उसी प्रकार कवयित्री दिनेश नंदिनी भी जीवित होकर भी अहिल्या जैसी पत्थर बन गयी दिखायी देती है।

प्रस्तुत है "रूदन के वर्णाक्षर" से सम्बन्धित एक उदाहरण -

"सूखी नदी का दर्द
मेरी कोख में समा कर
अहिल्या सा पत्थरा गया है।"[51]

इसके अतिरिक्त श्रीमती दिनेश नंदिनी ने अनेक पौराणिक तथा सांस्कृतिक प्रतीकों को अपनाकर नये संदर्भो को व्यंजित किया है।

4·3·3 <u>प्राकृतिक प्रतीक</u> :-

श्रीमती दिनेश नंदिनी के काव्य में प्रकृति में ग्रहण किये गये नये प्रतीकों का प्रयोग बहुलता से उपलब्ध होता है। वसंत, चमेली, जूही, फुलवारी, आम्र वृक्ष आदि प्रतीक कवयित्री के कविताओं में अधिक दिखायी देते हैं। इनकी गणना पारंपरिक प्रतीकों के रूप में की जाती है, किन्तु श्रीमती दिनेश नंदिनी ने इनका प्रयोग पारंपरिक रूप में न कर इसके माध्यम से आधुनिक जीवन के कडवे संदर्भो को अभिव्यक्त करने का सार्थक प्रयास किया है। सौन्दर्य आगार होने के कारण प्रकृति के प्रति जब साधारण मानव के मन में ही इतना नैसर्गिक आकर्षण रहता है तब अधिक भावुक और संवेदनशील होने के कारण कवियों का तो उससे शीघ्र ही प्रभावित हो जाना स्वाभाविक है। हिन्दी के काव्यों में भी प्रकृति का विविध रूपी अंकन किया गया है लेकिन दिनेश नंदिनी जी के काव्यो में प्रकृति को अपेक्षाकृत कम स्थान मिला हैं।

इसका कारण यह है कि उनका अधिकांश जीवन पर्दे में बीता और प्राकृतिक सौन्दर्य के निरीक्षण का उन्हें बहुत कम अवसर मिला, अतः वे उससे अधिक प्रभावित नहीं हो पाई। वस्तुतः सत्य तो यह है कि केवल स्वतन्त्र रूप में शुध्द प्रकृति-

चित्रण के उदाहरण उनकी कृतियों मे बहुत कम हैं।

उदाहरण के रूप में "आम्रवृक्ष" प्रतीक का प्रयोग दृष्टव्य है जिसे कवयित्री ने अपने प्रेमी की व्यंजना के लिए प्रस्तुत किया हैं ।

अ· "ऐ मंजरित आम्रवृक्ष ।
तुम, अबूझ
प्रार्थना में करबध्द खड़े
झुकी शाखाओं से
वसंत के आगमन की सूचना देते।"[52]

इसप्रकार कवयित्री दिनेश नंदिनी ने "चक्राकार घूमती ज्वालाएँ" इस कविता में "आम्रवृक्ष" को अपने प्रेमी का प्रतीक मानकर उसे अबूझ कि उपमा दि है, जो वसंत के आगमन की सूचना देने के लिए अपनी शाखाओ को झुकाये खडा है।

"जलती पर्ण-कुटी में" इस कविता के द्वारा कवयित्री ने अपने अनुभव को काव्य का रूप दिया है। इस कविता में कवयित्री ने "बादल" को प्रतीक मानकर अपने प्रेमी का बदला हुआ रूप प्रकट किया है ।

जैसे - "वाणी तेरी
कैसी बहुरूपा
बरसाती बादलों की भाँति
बदलता रहता है इसका रंग
कभी काली द्राक्षा-सा कृष्ण
कभी सित कमलो सा श्वेत
कभी रक्त-सा सुर्ख ···

नहीं समझ पाती
इसके भविष्य संकेत
रंग-विज्ञान ·····।"[53]

प्राकृतिक प्रतिको के अंतर्गत दिनेश नंदिनी ने सर्वथा मौलिक प्रतीको को भी अपनाया है। "जलती मशाल" का प्रतीक ऐसा ही मौलिक प्रयोग है। "कुँआरी कन्या और शिव" इस कविता में दिनेश नंदिनी ने अपने अनुभव को इस तरह से स्पष्ट किया है कि उनका जीवन अन्धेरी गुंफा में जलती हुयी अकेली मशाल की तरह है। हर समय उन्होंने किसी का इन्तजार किया। जिसका इन्तजार उन्हे था वह तो उन्हें नही मिला और उसी वजह से उनका जीवन जैसे सूखे पत्ते की तरह बन गया। यथा दृष्टव्य है कतिपय पंक्तियाँ जो प्राकृतिक प्रतीक को लेकर लिखी गयी हैं -

"खिडकी के सहारे खडी
आग और पानी के बीच की
पतली रेखा पर
नगीने - सी जडी
अँधेरी गुफा में
जलती अकेली मशाल ।"[54]

इस प्रकार फूल का प्रतोक भी दिनेश नंदिनी के काव्यों में अधिक दिखायी देता है। चमेली, जूहीं आदि फूलों का प्रतीक कवयित्री के अपने अलौकिक प्रियतम से मिलनानुभूति के आनंद के संकेत के प्रतीक रूप में आए हैं।

"आँचल के दूध से धुला पथ" इस कविता में "फूल" का प्रतीक दिखायी देता है।

"कोरे कागजों पर
अश्रुओं के जाल बिछे हैं
जिन में तुम्हारा चेहरा
फूल-सा खिला है।"[55]

इसप्रकार दिनेश नंदिनी ने काव्य में प्रकृति से विभिन्न प्रतीको को ग्रहण कर अपने कथ्य को तीव्रता से संप्रेषित करने का प्रयास किया है। उसमें वे पूर्णतः

सफल रहें हैं। दरिया, पर्वत, पठार, खंडहर इत्यादि प्रतीक उनके काव्य में अधिक दिखायी देते हैं, उनके काव्य में यह चित्र अनायास रूप में उपलब्ध होते हुए दिखायी देते है। पुराने खंडहरों के माध्यम से उन्होंने मन की आंतरिक गहनता को साकार करने का अद्‌भुत प्रयास किया है।

"उत्तर में खंडहरों को गुंजाती
लौटती है
सीली-स्मृतियों में लिपटी
हवा
जो खंडहरी अवसाद से भर जाती है।"[56]

4·3·4 सैध्दांतिक प्रतीक :-

वर्तमान के यांत्रिक परिवेश की सार्थक अभिव्यक्ति के लिये श्रीमती दिनेश नंदिनी ने सर्वथा मौलिक प्रतीको की सर्जना की है। इन प्रतीको को यांत्रिक प्रतीक की संज्ञा भी दी जा सकती है। यांत्रिकता जहाँ एक ओर विकास और सभ्यता के नये द्वार खोलती है वही मन में विक्षुब्धता भी उत्पन्न करती है।

कवयित्री दिनेश नंदिनी के "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह की कविताओं में सैध्दान्तिक प्रतीक कम दिखायी देते है। उनके काव्यों मे नारीमन का अंतर्द्वन्द्व प्रमुख होने के कारण विशेष वर्ग के जीवन परिवेश का अत्यन्त प्रामाणिक और प्रभावी चित्र दिखायी देता है, और इसलिए उनके काव्यों में विरहात्मक सैध्दान्तिक प्रतीक कुछ मात्रा में देखने को मिलते हैं। जैसे माला, बंदुक, विरह की कटार, सुदर्शन चर्क आदि उदाहरणो को उन्होंने अपनी विरह वेदना, नश्वरता का एहसास, घुटन, विफल प्रेम, वैवाहिक जीवन की विडंबना, अंतर्द्वन्द्व आत्मपीडा आदि ऐसे अनेक विषयों को प्रस्तुत करने के लिए अपने काव्यों में स्थान दिया है। इस शब्दों का प्रयोग कर कवयित्री ने यांत्रिक परिवेश को स्पष्ट करने का प्रयास किया हैं।

जैसे - "सोच और कर्म में झूलता स्वप्न" इस कविता से उदधृत चित्र दृष्टव्य हैं ।

"चलेगा सुदर्शन चक्र
अहिंसा को नये आयाम देगा
बहेगी सुखान्तिका नदी -
पहूँचेगी द्वार-द्वार तक
सृष्टि को नयी दृष्टि
और दर्शन को देगा नयी दिशा
हर बार सोचती रही।"[57]

इसीप्रकार एक अन्य चित्र दृष्टव्य है जिसमे कवयित्रीने विरह के प्रतीक रूप में कटार को अपनाया हैं। "खुशबु की फूहारे" कविता में विरह के रूप में कटार का चित्रण कवयित्री की मौलिकता को व्यंजित करता हैं -

"अब, मैं
तेरे लिए रूके हुए पलों को
जिंदगी से छाँट दूँगी
इन्हे भी जहर बुझी विरह की कटार से
काट दूँगी ।"[58]

"प्यार बनाम अपराध" कविता में भी सैध्दांतिक प्रतीक को लेकर कवयित्रीने अपने चिंतनात्मकता को व्यक्त किया है। जैसे -

"प्यार कहीं जब
अपराध पालता है -
संदेह पर संदेह गढ़ता
अपने हाथों दीवारें खडी करता
भाले-सा आर-पार सालता है।"[59]

इसके अतिरिक्त दिनेश नंदिनी ने अपने प्रियतम को मिलन का आमन्त्रण देकर कहीं कहीं प्रकृति से गृहीत प्रतीकों को सैध्दातिक प्रतीक के रूप में प्रयुक्त कर अर्थ को विशिष्टता प्रदान की हैं।

"चक्राकार घूमती ज्वालाएँ" कविता से उद्धृत उदाहरण -

"उस प्रदेश की
चक्राकर घूमती ज्वालाएँ काली -
वृक्ष के भीतर चका चौंध मचानेवाली
पत्रावली और पुष्प - पंखुरियों में कौंधती
मुझ पर गाज बन गिर रही हैं"[60]

इसीप्रकार दिनेश नंदिनी के काव्यो में मानवद्वारा निर्मित वस्तु-जगत अथवा कला कौशल से सम्बन्धित प्रतीकों ग्रहण किया है, जो विभिन्न कलाओं से सम्बन्धित रहे। "इसीलिए यहाँ चित्रकला, संगीत कला, मूर्ति कला से सम्बन्धित प्रतीक नवीनता लेकर सामने आते हैं। सभी प्रतीक कवयित्री दिनेश नंदिनी ने इस ढंग से व्यक्त किये है कि ये यथार्थ में छायावादी कविता के विशिष्ट अंग बन गये। अतः चित्रकला से चित्रकार, रंग, रेखा, तूलिका, छाया-प्रकाश इत्यादि, संगीत कला से वीणा, तार, झंकार, विहाग, मीड ,मूर्च्छना इत्यादि तथा मूर्तिकला से मूर्तिकार पाषाण।"[61] इत्यादि प्रतीक श्रीमती दिनेश नंदिनी के काव्यों में सहज रूचि और कल्पना के साथ दिखायी देते हैं। इस प्रकार दिनेश नंदिनी के काव्य में "मूर्तिकार", दौर-दौरा आदि प्रतीकों का प्रयोग दृष्टिगत होता है। मूर्तिकार को अतीत की बौध्दिक चेतना का प्रतीक तथा दौर-दौरा मानस की पाशविक वृत्तियों का प्रतीक माना हैं।

"व्यक्ति के चेतन मन के अलावा एक और मन होता है, जिसे अवचेतन मन कह सकते हैं। अवचेतन मन में ही पाशविक वृत्तियाँ निहित रहती हैं। मानव अपनी इन पाशविक वृत्तियों से अपरिचित ही रहता है। इन वृत्तियों से वह इतना भयभीत रहता है कि यदि उसे इनका ज्ञान भी हो जाये तो भी वह इन्हे छुपाने का प्रयास करता है क्योंकि ये वृत्तियाँ उसकी शालीनता और चरित्र के खोखलेपन को प्रत्यक्ष कर सकती है।"[62]

कतिपय पंक्तियाँ "युध्द संदेश" कविता में लिखी गयी हैं, जिसमें यहीं भाव प्रत्यक्ष किये गये हैं -

"मेरी सोच के मैदान में
बे-पहचाने
फटे-कटे
कबंधो का दौर-दौरा है ।"[63]

इसप्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि दिनेश नंदिनी की प्रतीक योजना अत्यंत सार्थक और विशिष्ट भंगिमा से युक्त है। प्रतीको का चयन उनकी शिल्प प्रवणता को स्पष्ट करता है। पारंपरिक प्रतीकों को नये संदर्भो से जोडकर दिनेश नंदिनी ने जहाँ अपने काव्य को मौलिकता से मंडित किया है वहीं अपनी अद्‌भुत अभिव्यक्ति क्षमता से अपने भावों को विस्तृत वितान भी प्रदान किया। सर्वथा मौलिक प्रतीकों की सर्जना उनकी सृजनक्षमता का अनूठा परियच देती हैं। दिनेश नंदिनी ने एकही प्रतीक को विभिन्न अर्थोकी व्यंजना के लिये भी प्रस्तुत किया है जो उनके कौशल का बोध कराती है। रहस्यमयता का समावेश उनके सम्पूर्ण काव्य में परिलक्षित होता है। उनकी प्रतीक योजना ने उनकी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में सुन्दर सहयोग दिया है। यह कहना असंगत न होगा कि दिनेश नंदिनी की प्रतीक योजना अनुठी अर्थवत्ता से ओतप्रोत है जो उनके काव्य को अत्यंत सहज बनाती है। उनके प्रतीकों ने उनके काव्य को तराश कर अत्यंत पैना और धारदार बना दिया है जो युगीन परिवेश और आम आदमी की पीडा से साक्षात्कार कराने में पूर्ण सक्षम है।

4·4 अलंकार योजना :-

पूर्व में कविता कामिनी को सुसज्जित करने तथा कविता में चमत्कार लाने की दृष्टि से अलंकारों का प्रयोग किया जाता था। छायावादी कवियों ने अलंकारो के संदर्भ मे प्रचलित इस पुरातन चमत्कारिता पूर्ण मान्यताओं का खण्डन कर उसे संशोधित रूप प्रदान किया। इस संदर्भ में "पंत" कामत समीचीन प्रतीत होता है -

"अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिये नहीं, वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार है।"[64]

"तारसप्तक" के कवियो ने अलंकारो को दिखावे के लिये प्रयोग नहीं किया है। नई कविता में शिल्प की अपेक्षा कथ्य को अधिक प्रधानता मिली है। नये कवियों ने आग्रहपूर्वक अलंकारों का प्रयोग नही किया किन्तु जो अलंकार स्वाभाविक और सहज रूप में आ गये उन्हें नकारा भी नहीं है। "तारसप्तक" के सम्पादक "अज्ञेय" की धारणा है - "तारसप्तक की कविता जैसी जडाऊ कविता नहीं है, वह वैसी हो भी नहीं सकती। जमाना था जब तलवार और तोपे भी जडाऊ होती थी पर अब गहने भी धातु को सांचो में ढालकर बनाये जाते है और हीरे भी तप्त धातु के सिकुडन के दवाब से बंधे हुये होते है।"[65]

दिनेश नंदिनी का "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह उनके व्यक्तिगत जीवन के विविध आयाम प्रस्तुत करता है। उसमें अलंकार स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होते है। दिनेश नंदिनी ने अलंकारो का प्रयोग कभी आग्रहपूर्वक नहीं किया। दिनेश नंदिनी ने प्रेमजीवन को स्पष्ट किया है, वैवाहिक जीवन की विडंबना को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है, तथा विरह वेदना, विफल प्रेम, घुटन, अपेक्षा भंग, संयोग का प्रतीकात्मक वर्णन, पश्चाताप आदि अनेक विषयों को अपने काव्य में स्थान देकर काव्यसंग्रह को सार्थक बनाने का सफल प्रयास किया है। यद्यपि दिनेश नंदिनी अपने काव्य में अलंकारो का सायास प्रयोग नहीं किया फिर भी अनायास रूप में अलंकार उनके काव्य में आ गये है। अतीत के स्मृतिबिम्बो और नारी मन के अंतर्द्वन्द ने उनकी कविता को अलंकारो से बोझिल नही होने दिया है।

दिनेश नंदिनी के काव्य में विविध अलंकारो का प्रयोग उपलब्ध होता है। उनकी अलंकार योजना की यह विशेषता है कि वह पूर्णतः प्रतीकात्मक और बिम्बात्मक है। दिनेश नंदिनी का अभीष्ट कथ्य को पूर्ण प्रखरता से संप्रेषित करना था। अलंकारों का प्रयोग भी दिनेश नंदिनी ने कथ्य प्रेषण की दृष्टि से ही किया। उनके काव्य में बिम्ब, प्रतीक और अलंकार इतने घुले-मिले है कि उन्हें अलग से खोजना आसान नहीं है। उनके काव्य में मानवीकरण का प्रयोग अधिक मिलता है। इसके अलावा अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, वीप्सा, उपमा, रूपक आदि अलंकारों का प्रयोग बहुलता से उपलब्ध होता है। उनके कविताओं मे अपन्हुति का प्रयोग भी दृष्टिगत होता हैं।

इस प्रकार उनके काव्य में प्रयुक्त अलंकारों का क्रमवार अध्ययन इसतरह है -

4·4·1 अनुप्रास :-

एक वर्ण की पुनरावृत्ति अनुप्रास कहलाती है। कविता में अनुप्रास अलंकार स्वाभाविक रूप से आ ही जाता है। अनुप्रास का सायास प्रयोग कविता को अकृत्रिम और बोझिल बना देता है। दिनेश नंदिनी के काव्य में अनायास रूपसे उपस्थित अनुप्रास अलंकार कास सुन्दर उदाहरण दृष्टव्य है। "प्यार बनाम अपराध" कविता में यह अनुप्रास अलंकार का उदाहरण स्वाभाविक रूप से आ गया दिखायी देता है।

"मन ।
धूल - धूप और धुएँ में लिपटा - लुथडा
बार - बार सरहदे लाँघता
घायल हो-हो लौटता
टाकें लगाता बाँधता है।"[66]

इस में दितीय पंक्ति में "ध" और "ल" की आवृत्ति, दितीय पंक्ति में "ब" की आवृत्ति तथा तृतीय पंक्तिमें "ह" की आवृत्ति अपनी छटा बिखेरती दिखाई देती हैं।

इसप्रकार और ऐसे अनेक उदाहरण है जिस में दिनेश नंदिनी के सहज भाव से निकले हुए अनुप्रास अलंकार है।

अ· "परछाइयों का शहर" कविता में लिखित एक उदाहरण -

"मुक्त कब हुई ?
राग से
पराग से
खुशबु से
छंद से
जीवन से

मौत से
मैं मुक्त कब हुई ?"[67]

ब· "एक नींद आग रहित" कविता में भी अनुप्रास अलंकार की योजना दिखाई देती है।

"अपनी अस्त्रि से
प्यार से, जवानी से
तर्क से, तूफान से
आग से, पानी से।"[68]

4·4·2 <u>उत्प्रेक्षा</u> :-

जहॉ उपमेय में उपमान की संभावना होती है, वहॉ उत्प्रेक्षा अलंकार होता हैं। दिनेश नंदिनी को कविता में उत्प्रेक्षा का योग अत्यंत कुशलता से किया गया दिखायी देता है। कतिपय उदाहरण इस संदर्भ में अवलोकनीय हैं -

अ· "कभी जब चलने को हुई
कि बरज देते है ऐसे - ये नयन
कि जाफरानी फूलों का दुशाला ओढालिया हो
और खुशबु से भर उठे हो
मन - प्राणों के दिगंत ····।"[69]

ब· भाड में घिरी हुई
आयी थी वहॉ में :
- हॉ मैं भी -
जलते - बुझते दीपों की पॉत-सी
भूले हुए अतीत
और इन्द्रधनुषी भविष्य की
मधुरिम बात सी····।"[70]

4·4·3 वीप्सा :-

इन अलंकारों का प्रयोग दिनेश नंदिनी ने घबडाहट, आश्चर्य, आदर, घृणा आदि के भावों की तीव्रता से व्यक्त करने के लिए किया है। उनके काव्य में इसका प्रयोग प्रचुरता से उपलब्ध होता है। इसके कुछ उदाहरण दृष्टव्य है-

अ· "कभी जब खिझाने पर आये
तो लाचार बावली बन
सुध - बुध भूल
संकोच की झिलमिली चादर के नीचे
ढँक गयी, छुई - मुई ....."[71]

ब· "उस प्रदेश की
चक्राकार घूमती ज्वालाएँ काली -
वृक्ष के भीतर चका चौंध मचाने वाली
पत्रावली और पुष्प-पंखुरियों में कौंधती
मुझ पर गाज बन गिर रहीं है···।"[72]

क· "किन्ही डरावनी आवाजों से भयभीत
और घायल
भूखी और निराश
अपनी नारी गंध को छिपाये
आदमखोर पहाडियों की तलहाटियों को
लाँघ जाना चाहती है
रातों रात ····।"[73]

4·4·4 उपमा :"

उपमा को अर्थालंकारों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। दिनेश नंदिनी के काव्य शिल्प में नीवन उपमानों एवं रूपकों की बहुलता अनायास ही प्राप्त हो जाती है। कवयित्री को यहाँ विभिन्न उपमानों द्वारा अपने पियतम की प्रतीक्षा का वर्णन किया है।

"ओ, गंधवाही पवन" इस कविता में कवयित्री ने अपने प्रियतम को "पवन" की उपमा देकर उसके आने की प्रतीक्षा की है।

"बस तेरी प्रतीक्षा है
ओ गंध वाही पवन ।

सूक्ष्म शरीर का सौन्दर्य
सौष्ठव
केवल तेरी दृष्टि के लिए।"[74]

दिनेश नंदिनी ने "कला की विडंबना" इस कविता में "मूर्तिकार" की उपमा देकर अपने प्रियतम को सम्बोधित किया हैं।

"ऐ मूर्तिकार ।
तुम कहाँ थे अब तक ?
मैंने प्रार्थना की तुम्हारी
सूरज के घोल से
तुम्हारे हाथ धुलाये ।"[75]

वस्तुतः दिनेश नंदिनी ने भिन्न-भिन्न उपमाओं के माध्यम से जो चित्र उपस्थित कियें उनमें सजीवता आ गई है। आम्रवृक्ष, प्रेम पाखी, गरूड पक्षी, मृर्तिकार, गंधवाही पवन, आदि उपमाएँ उन्होंने अपने प्रियतम को दिये है। इस तरह एक उपमेय के लिये अनेक उपमानों का प्रयोग दिनेश नंदिनी के शिल्प कौशल को प्रकट करता है।

4·4·5 रूपक :-

इस अलंकार का प्रयोग भाषा में कसावट लाता है। यह शिल्प की दृष्टि से उपमा की अपेक्षा अधिक संश्लिष्ट होता है। दिनेश नंदिनी के कविताओं में इसका प्रचुर प्रयोग मिलता है, जो उनके काव्य को एक अनुठी आभा प्रदान करता हैं।

"जलती पर्ण-कुटी में" इस कविता में दिनेश नंदिनी ने प्रियतम के वाणी को दिये गये अलग-अलग रूपक दिखाई देते हैं।

"वाणी तेरी
- कैसी बहुरूपा -
बरसाती बादलों की भाँति
बदलता रहता है इसका रंग
कभी काली द्राक्षा सा कृष्ण
कभी सित कमलों सा श्वेत
कभी रक्त-सा-सुर्ख ..."[76]

"पल्लू में लगी ऑच" कविता में कवयित्री की आत्मचिंतनात्मकता दिखाई देती है। इस कविता में उन्होंने स्वयं को "सुर्यमुखी" कहकर अपने प्रियतम के प्रतीक्षा की अवहेलना की हैं। प्रियतम के प्रतीक्षा मे हमेशा बैठी रहनेवाली कवयित्री दिनेश नंदिनी का स्वर इस कविता में चिंतित दिखाई देता है।

"सुर्यमुखी !
अपल त्राटक की
तुम किस साधना में लीन
इस जगती पर ....।"[77]

4·4·6 मानवीकरण :-

प्रकृति-चित्रण का यह रूप वहीं होता है जहा उसके निर्जिव पदार्थोपर मानवीय व्यापारों का आरोप कर उन्हें सजीव रूप में प्रस्तुत किया जाए। कवयित्री दिनेश नंदिनी ने इस रूप में प्रकृति का चित्रण अनेक स्थलों पर किया है। इसके सुन्दर प्रयोग से दिनेश नंदिनी ने अपने भावों को अनुठी प्रखरता प्रदान की है। इस अलंकार के सहज प्रयोग दिनेश नंदिनी की सहजता के परिचायक है। कतिपय उदाहरण दिनेश नंदिनी की शिल्प निपुणता का परिचायक कराने में पूर्ण सक्षम हैं।

"मेघों की रहस्य परतों में
लुकती - छिपती रात
जैसे धूप-धुले दिने को दिखती
ठिठकती है
हथेली पर प्राणों को दीये - सा सजाए
यह मैं थी
गंगा - घाट पर
संधि - बेंला में उतरते अँधियारे को पीठ दे
सीढियाँ उतरती ····

तुम ।
उतर आयी साँझ में
आयु की गठरी सिर पर उठाए
तब भी बडे व्यस्त
नजर आये
उन उत्तर - क्षणों में
जहाँ हमारी परछाइयाँ तक
हम से पहले
डूब चुकी थी ·····।"[78]

इसीतरह "प्राणों को दिये-सा सजाए" इस कविता में भी मानवीकरण अलंकार दिखाई देता है। प्रियतम के विरह में व्याकुल दिनेश नंदिनी ने प्रकृति की करूण अवस्था की कल्पना बडी मार्मिकता से की है। अपने प्रियतम को तितली पंख कहकर उन्होंने यहाँ मानवी व्यथा प्रस्तुत की हैं ।

"कापी के कोरे पृष्ठों में
सुखे पराग सने
मोहक तितली पंख हो
तुम

जिन्हे मैंने
जतन से सजाया।"[79]

इसप्रकार "हिरण्यगर्भा" कविता में प्रकृति का मानवीकरण और अमूर्त मनोभावों का मानवीय अंकन दिखाई देता है। तात्पर्य यह है कि मानवीकरण के रूप में कवयित्री ने प्रकृति से लेकर सूक्ष्म मनोभावों के जो भी चित्र उपस्थित किये, वे अत्यन्त सुन्दर दिखाई देते है। इससे स्पष्ट ही इसका आभास हो जाता है कि दिनेश नंदिनी ने अपने वैयक्तिक अनुभूती को सूक्ष्मता के साथ मानवीकृत रूप दिया है।

4·4·7 अपन्हुति :-

जहाँ प्रस्तुत को निषेध कर अप्रस्तुत की स्थापना की जाती है वहाँ अपन्हुति अलंकार होता है। इस प्राचीन अलंकार का सर्वथा नूतन प्रयोग दिनेश नंदिनी के शिलप वैशिष्टय का परिचय देता है। "सोंच और कर्म में झूलता स्पप्न" कविता से लिया गया अपन्हुति अलंकार का उदाहरण इसतरह है -

"कर्म के फुलवारी के पौधे
रहे मुर्झाते
यों कर्म से ही पैदा होने वाला करिश्मा
कभी घटित नहीं हुआ
जो पैदा होना था
वह मूढ गर्भ में ही मरता रहा ।"[80]

इन अलंकारों के अतिरिक्त दिनेश नंदिनी के काव्य में ध्वन्यर्थ व्यंजना, विशेषण विपर्यय आदि अलंकार भी सहज रूप में उपलब्ध होते हैं।

4·4·8 छन्यर्थ व्यंजना :-

जहाँ शब्दों की उच्चरित ध्वनि से अर्थ मुखरित होता है वहाँ ध्वन्यर्थ व्यंजना अलंकार होता है। डा·खगेन्द्र ठाकुर के अनुसार - "काव्य से इस शिल्प के प्रयोग से शब्द की व्यंजना के प्रयोग से शब्द-संगीत की सृष्टि होती है, लेकिन वास्तव मे उससे एक ध्वन्यात्मक बिम्ब खडा होता है जो अभिव्यक्ति की अर्थवत्ता

में वृध्दि कर देता है।"[81]

दिनेश नंदिनी के काव्य में छन्यर्थ व्यंजना के सुन्दर उदाहरण मिलते हैं - "आँखो में मचलती अलकनंदा" इस कविता में इसतरह ध्वन्यर्थ व्यंजना का एक उदाहरण दिखाई देता हैं ।

"इन, जोडो हुए दु:खो का क्या ढोंग करूँ
यात्रा के पडाव पर
उल्लास के मंदिर में
माथा टेकने के पूर्व ही
वे खन खना कर बिखर जायेंगे।"[82]

4·4·9 विशेषण विपर्यय :-

दिनेश नंदिनी की कविताओं में विशेषण विपर्यय अलंकार का प्रचुर प्रयोग अत्यंत सहजता से हुआ है। डा·लक्ष्मी नारायण सुधांशु के अनुसार - "किसी कथन को विशेष अर्थ - गर्भित तथा गम्भीर करने के विचार से विशेषण का विपर्यय हटा दिया जाता है। अभिधावृत्ति से विशेषण की जगह जहाँ है, वहाँ से हटाकर लक्षण के सहारे उसे दूसरी जगह बैठा देने से काव्य-सौष्ठव कभी-कभी बहुत बढ जाता है। भावाधिक्य व्यंजना के लिये विशेषण - विपर्यय अलंकार काव्यवहार बहुत सुन्दर होता है।"[83]

प्रस्तुत है कुछ उदाहरण :

अ· "मैं इसकी प्रतिकृति हूँ
या यह मेरी अनुकृति।"[84]

ब· "पैरो से जडें काटी थी
मिट्टी से मिट्टी
पाठी थी ।"[85]

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि दिनेश नंदिनी के काव्य में अलंकार स्वतः और स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होते है। उन्होंने आग्रह पूर्वक अलंकारों को कभी नहीं अपनाया। दिनेश नंदिनी का काव्य वैयक्तिक अनुभूति की पीडा से संवेदित है। यही कारण है कि जहाँ दिनेश नंदिनी के कथ्य और भावों की अभिव्यक्ति को प्रखरता से व्यंजित करना चाहा है वहाँ अलंकारों का प्रवेश अपने आप हो गया है। अनायास प्रयुक्त हुये अलंकारों का वैभिन्य उनके काव्य को युगानुकूल बनाने में सहायक रहा है। संक्षेप मे उनकी अलंकार योजना उनके विषय को संवेदना के अनुकूल बनाती है जो यथार्थ के सत्य का उद्‌घाटन कर उन्हें अतीत के स्मृति-बिंबों से जोडती है।

4·5 छन्द योजना :-

"आज की कविता बोलचाल के निकट तो जाना चाहती है, किन्तु गद्य से वह भिन्न भी रहना चाहती है। अतः गद्य से भेद बनाने के लिये उसने लय को अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार कर लिया है। इसप्रकार एक तरफ छंद के बंध तोडती है तो दूसरी तरफ संगीत यानी गेय तत्व को अधिक अपनाना चाहती है।"[86]

दिनेश नंदिनी नये युग की कवयित्री है। इसलिए दिनेश नंदिनी ने कविता को छंद के बंधन से मुक्त रखा है किन्तु विषय और भावों के अनुसार कहीं -कहीं पुराने छंदो को भी अपनाया है।

दिनेश नंदिनी का समुचा काव्यसंग्रह वैयक्तिक अनुभूति और अतीत के बिम्बों से ओत-प्रोत दिखाई देता है इसलिये इसमे रोमांस के लक्षण नहीं दिखाई देते। पारंपरिक कविता मे सौदर्य और प्रेम तत्व की प्रधानता के कारण ही छंदो का विशिष्ट विधान मिलता है। लेकिन दिनेश नंदिनी के काव्य में यथार्थ चिंतन की प्रवृत्ति के कारण यद्यपि छंद का निर्वाह नहीं हुआ है किन्तु उनके काव्य में एक विशिष्ट लयात्मकता के दर्शन होते है जो उनकी अनुभूति को विशिष्ट गरिमा के साथ अभिव्यक्त करती है। कविता का लय से घनिष्ठ सम्बन्ध है, दिनेश नंदिनी के काव्य में भी लय और तुक का निर्वाह सम्यक रूपसे मिलता है।

दिनेश नंदिनी के काव्य में प्रायः सभी प्रचलित शैलियों का प्रयोग हुआ है। उनकी समस्त रचनाओं का विधान मात्रिक अथवा वर्णिक लय पर आधारित है। दिनेश नंदिनी ने प्रगीत रचना नहीं की किन्तु उनके काव्य में प्रगीतात्मकता के लक्षण दिखाई देते है क्योंकि लय के साथ प्रगीतात्मकता का आत्मीय सम्बन्ध है। दिनेश नंदिनी विशुध्द रूप से प्रगीतकार नहीं थी। आत्मचेतना और संघर्ष कि कवयित्री दिनेश नंदिनी के पास प्रगीतों की रचना प्रक्रिया के लिये अवकाश नही था। फिर भी उनकी लंबी कविताओं में ऐसे स्थल अनायास ही देखे जा सकते है। उदाहरण के लिए "सोच और कर्म में झूलता स्वप्न" कविता का अंश दृष्टव्य है

"पहले से अधिक भयानक ही छिडते रहे जंग
मछली को निगलती रही मछली निरूद्देग में
गोलियाँ चलती रहीं तमाशों - सी
भूख मचलती एडियाँ रगडती
नंग धडंग सपने
समय की देहरी पर प्रतीक्षारत
जिंदा जला दिये गये
धरती रंग गयी निश्चल कामगार रक्त से
पर मुझे तब भी
लगता रहा कुछ होगा,
जरूर होगा कुछ
जो अब तक नही हुआ
मेरी कोख से ही होगा ..."[87]

इसीतरह "हिरण्यगर्भा" में संकलित "प्रतीक्षातुर ठिठकी लहर" कविता में दिनेश नंदिनी स्वयं के अस्तित्व के विषय में प्रश्न करती, प्रतीक्षा में खडी दिखाई देती है। और इसमे उनकी प्रगीतात्मकता के लक्षण दिखाई देते है।

"तुम्हारा अभियोग
प्रेत बन कर कस रहा है अपनी जकड़न
तोड़ रहा है मेरा मन, बल, आत्मा
और मैं कहीं अपने भीतर
अपने को खोजती - ढूँढती
कि मैं कौन हूँ -
प्रेत - बाधित वृक्ष के नीचे की
सुनसान बावडी
बावडी का परित्यक्त जल
जल की प्रतीक्षातुर ठिठकी कोई लहर ???"[88]

"एक नींद आग रहित" दिनेश नंदिनी की एक लम्बी कविता है जो अन्य दीर्घ कविताओं सी अपेक्षा कुछ छोटी है इसमें गीतात्मकता अत्यंत सहज रूप में उपलब्ध होती है -

अपनी आँखो को
अपने की रक्त से धोती
अपनी मिट्टी को
अपने हाथों से लगातार भिगोती
किंतु आँचल मे लगी आग है कि बुझती नही।"[89]

इसी प्रकार "प्रतीक्षा में पनिहारिन" कविता गीतात्मकता के प्रयोग का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं -

"मै अपनी कंचन काया को निखारने
मैने उसे
सहस्त्र धाराओं में स्नान कराया
अलभ्य वनस्पतियों,
सुगंधित द्रव्यों से अभिसिक्त किया

एडियों को खुरदरे पत्थरों से रगडकर चमकाया
कोयले के चूर्ण से घिर कर
दाँतों को सीपियों-सा दमकाया···"[90]

यद्यपि दिनेश नन्दिनी का आग्रह कभी छंदों के प्रति नहीं रहा फिर भी उनके काव्य में विविध छदों का प्रयोग देखा जा सकता है। इस प्रकार दिनेश नन्दिनी के सम्पूर्ण काव्य में गत्यात्मकता का वैशिष्ट्य उपलब्ध होता है। दिनेश नन्दिनी की छंद योजना स्थिति के अनुसार परिवर्तित होती रही है।गत्यात्मकता से भरपूर निम्न उदाहरण उनके छंद कौशल का ही परिचायक है -

"पूर्व और वर्तमान जन्मों के मानचित्र
एक के बाद दूसरा
खुलता रहा आँखों के पर्दों पर
मैं चकरी-सी घूमती

अदृश्य के शरीर का सहारा लिया
सौगंधे टूट गयी
वंश-वृक्ष के पत्ते टहनियों से
छूट गये"[91]

दिनेश नन्दिनी ने ध्वन्यानुकूल छन्दों का प्रयोग भी किया है। "आँखों में मचलती अलक नंदा" कविता में प्रस्तुत है एक उदाहरण -

"इन जोडे हुए दुखों का क्या ढोंग करू
यात्रा के पडाव पर
उल्लास के मंदिर में
माथा टेकने के पूर्व ही
वे खनखना कर बिखर जायेंगे।"[92]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि छंदों पर दिनेश नन्दिनीजी का अनूठा अधिकार था। उनके छंद विधान में लयात्मकता का सुन्दर समन्वय दृष्टिगत होता है। सत्यान्वेषण और यथार्थकन की प्रवृत्ति के कारण कहीं कहीं लय दोष भी उनकी कविताओं में मिलता है। किन्तु यह दोष अपनी गति और स्वाभाविकता के कारण दोष न रहकर पाठक के मन पर एक विशिष्ट प्रभाव छोड़ता है। दिनेश नन्दिनी ने विषय और युग के अनुरूप मुक्त छंद को प्रधानता दी है। उनकी छंद योजना में यदि कहीं कोई दोष मिलता भी है तो वह केवल कथ्य की संप्रेषणीयता के कारण ही है। उनकी सहज और स्वाभाविक छंद योजना उनके शिल्प सौष्ठव को नूतन गरिमा से अभिमण्डित करती हैं।

4·6 काव्य रूप

वस्तुतः दिनेश नन्दिनी का सम्पूर्ण "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह गीति काव्य पर आधारित है। इस कविता में आये हुए सम्पूर्ण विषय कवयित्री की अन्तश्चेतना से सम्बन्ध रखते हैं। यही कारण है कि इस काव्य में भावों की सूक्ष्मता और गहनता अन्य बातों की अपेक्षा अधिक पायी जाती है। अपनी विरह वेदना और वैवाहिक जीवन की विडम्बना से प्रभावित होने के कारण दिनेश नन्दिनी ने प्रबन्ध शिल्प की ओर अधिक न झुक कर गीतिकाव्य के छोटे स्वरूप को ही मुख्य रूप से स्वीकारा है। यह काव्यसंग्रह दिनेश नन्दिनी के जीवन की वैयक्तिक अनुभूति तथा अतीत के स्मृति-बिंबो को संजो कर साहित्य पथ पर अग्रसर हुआ है।

इस तरह गीति-काव्य की प्रमुख रूप से -

1· संगीतात्मकता 2· आत्माभिव्यक्ति एवं अनुभूति की तीव्रता

3· प्रभावान्विति 4· संक्षिप्तता [93]

ये चार विशेषताएँ दिखायी देती हैं। दिनेश नन्दिनी के काव्यसंग्रह में मुख्य रूप से शृंगार भावना प्रधान, दार्शनिकता प्रधान, आत्मपरक, भक्तिपरक, प्राकृतिक सौन्दर्य प्रधान आदि विषय हैं। इन सभी के अन्तर्गत गीति-काव्य की उक्त विशेषतायें

सहज ही परिलक्षित की जा सकती हैं।

4·6·1 संगीतात्मकता

संगीतात्मकता को गीतिकाव्य का प्रमुख आधार माना जाता है। गीत में काव्य और संगीत के तत्वों का अद्भूत समाहार रहता है। दिनेश नन्दिनी के काव्यों में आन्तरिक और बाह्य संगीत के मूल में लय का सहज समावेश रहता है। दिनेश नन्दिनी ने अपने गीतों को माधुर्य प्रदान करने के लिए भिन्न लयात्मक छन्दों को कुछ विशिष्ट परिवर्तन के साथ ग्रहण किया है। "प्राणों को दिये-सा सजाए" कविता में प्रकृति एवं रहस्य प्रधान गीत का संकेत देती हुई प्रस्तुत पंक्तियाँ दर्शनीय हैं, जिनमें संगीत का एक अपूर्व प्रवाह देखा जा सकता है -

"भीड़ में घिरी हुई
आयी थी वहाँ में
- हाँ मैं भी -
जलते-बुझते दीपों की पाँत-सी
भूले हुए अतीत
और इन्द्रधनुषी भविष्य की
मधुरिम बात-सी···।"[94]

4·6·2 आत्माभिव्यक्ति एवं अनुभूति की तीव्रता

सृष्टा की अनुभूति से ही काव्य का जन्म होता है, तथा अनुभूति की अभिव्यक्ति को ही आत्माभिव्यक्ति की संज्ञा दी जाती है। इसी अनुभूति की तीव्रता गीत में अत्यन्त आवश्यक होती है। दिनेश नन्दिनी की अनुभूति अत्यन्त तीव्र है, जिसकी झलक उनके गीतों में सर्वत्र दिखाई देती है। इसी विशेषता के कारण दिनेश नन्दिनी का "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह सृजन के सत्य को लेकर चलता है। "हिरण्यगर्भा" के सभी कविताओं में अनुभूति का आवेग दिखाई देता है।

"प्रेतबाधित" कविता में कवयित्री का आत्मानुभव दिखायी देता है -

"तब से -
स्वयं को स्वयं से
अलग कर चुकी हूँ
महायात्रा के अंतिम आयाम पर
प्रेतबाधित
मृत्यु की देहरी पर रूकी हूँ।"[95]

इसी प्रकार विफल प्रेम में भी अनुभूति की तीव्रता से युक्त कुछ काव्य दिखाई देते हैं जिसमें दिनेश नंदिनी का सत्यभाव दिखाई देता है।

"आँचल में बँधे
सूरज की किरणों से
उसके हाथ धुलाये
रूप की छैनी को
"काबा" की सिध्द
अधर-चुम्बित शिला पर रगड़
पैना बनाया।"[96]

4·6·3 <u>प्रभावान्विति</u>

प्रभावान्विति से तात्पर्य उद्देश्य की इकाई से होता है। गीत की मूल भावना का एक समन्वित प्रभाव पाठक पर पडना अत्यन्त आवश्यक है, इसलिए भाव, विचार अथवा चित्र की पूर्णता का होना गीत के लिए परम आवश्यक है। महाकाव्य के तुल्य ही गीत के अन्तर्गत आदि, मध्य, अन्त की स्थिति होती है। जिस पंक्ति से गीत का प्रारम्भ होता है, उसके भाव का सम्पूर्ण गीत में अन्त तक निर्वाह होने के साथ उसका किसी विशेष उद्देश्य को लेकर ही समापन होना चाहिए, तभी पाठक उसमें रस का अनुभव कर सकता है यह तथ्य डॉ·रामेश्वर लाल खंडेलवाल के प्रस्तुत मंतव्य से और भी स्पष्ट हो जाता है - "गीत की टेक गीत के स्थापत्य की एक अनिवार्य आवश्यकता है, चाहे उसका उपयोग संगीत रूप में हो अथवा पाठ्य रूप में। टेक गीत की भावना का मर्म स्थल होता है जिससे

गीत का प्रत्येक छंद उसी तरह जुड़ा रहता है, जिसप्रकार रथ-चक्र की आराएँ उसकी नाभि से।"[97] दिनेश नन्दिनी के सम्पूर्ण काव्य में प्रभान्विति का सुन्दर निर्वाह हुआ है दिनेश नन्दिनी ने अपनी अनूभूति को सम्पूर्ण चेतना के साथ अभिव्यक्त किया है। इसलिए उनके कविताओं में भावों का बिखराव न होकर एक सुगठित रूप विद्यमान है। इसप्रकार अपने वैवाहिक जीवन की विडंबना को प्रस्तुत करते हुए दिनेश नन्दिनी ने"चिर-सुहागन" इस कविता में प्रभावान्विति को प्रकट किया है।

"मोम की बनी मानव आकृतियाँ
पानी की दीवार पर ठहर गयी है
तुम्हारे लिखे हुए आश्वासनों के अक्षर
झर कर धरती पर गिर रहे हैं।"[98]

इन पंक्तियों में आदि से अन्त तक भावों का सुगठित स्वरूप तो देखने को मिलता ही है, साथ ही प्रारम्भ की पंक्ति से लेकर अंतिम पंक्ति तक उद्देश्य की अभिव्यक्ति भी सफल बन पडी है।

4·6·4 संक्षिप्तता

संक्षिप्तता अथवा लघुता गीत का आवश्यक प्रतिबन्ध है। क्योंकि गीत, संगीत अथवा लय के साथ नर्तन करता है, इसलिए उसका अनावश्यक लम्बा होना उचित प्रतीत नहीं होगा। गीत जितना छोटा होगा, उसमें उतना ही भाव सौन्दर्य, भाषा की विशदता और कल्पना की उपयुक्तता होगी। इसतरह "गीत-भाव-दृष्टि से मूलतः एक अनुभूति तरल व अन्तर्मुखी रचना है जो बहुत घने इतिवृत्त को वहन नहीं कर पाता। हाँ, कल्पना चित्रों के रूप में कथ्य अवश्य सुग्राह्य हो सकता है।"[99] दिनेश नन्दिनी की विशेषता यही है कि वह अपने लघु कलेवर में विशद भावों को संजोये रखती है। उदाहरण के लिए "सृजन-सत्य" कविता में प्रस्तुत पंक्तियाँ दर्शनीय हैं -

"अच्छा किया
या बुरा -
नहीं जानती।
पर माँ न होते हुए भी
मेरे सत्य ने मातृत्व का अर्थ दिया
सृजन-प्रक्रिया से न गुजरी, सही

मिटते हुए
तुम्हारे लिए
सृजन-सत्य का
वरण किया है।"[100]

इस काव्य में कवयित्री के उपेक्षित एवं निराशापूर्ण जीवन का क्रमशः निर्वाह हुआ है जो अत्यन्त सार्थक है। इसीप्रकार का भाव गठन दूसरे कविता में भी मिलता है। अतएवं स्पष्ट है कि दिनेश नन्दिनी का "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह गीति की सीमारेखाओं में बँधा होने के कारण वह संगीतात्मकता, आत्माभिव्यक्ति, प्रभावान्विति और संक्षिप्तता इन गीतिकाव्य के प्रमुख तत्वों की कसौटी पर पूरी तरह खरा उतरता है।

उपसंहार (मूल्यांकन)

नये युग की कवयित्री दिनेश नन्दिनी का "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह शिल्प के दृष्टि से कुछ स्थलों पर अवश्य चमत्कार पूर्ण दिखाई देता है, किन्तु वह चमत्कार कवि-चतुष्ट्य के समान स्वाभाविक ही कहा जा सकता है। इन्होंने जानबूझकर किसी भी स्थल पर चमत्कार उत्पन्न नहीं किया। भाषा की दृष्टि से एक ओर तो ऐसी कोमलकान्त पदावली का प्रयोग किया जो कवयित्री के हृदयगत सूक्ष्म भावों को वहन करने में समर्थ हुई, तथा दूसरी ओर ऐसी पदावली भी अपनाई जिससे जन-मानस की सम्वेदना को अपने में समाहित कर लिया। इनकी लाक्षणिक और व्यंजनात्मक

पदावली के अन्तर्गत सूक्ष्म भावों का स्पन्दन और वैयक्तिक अनुभूति का स्वर सहज सुनाई पडता है। चित्रात्मक प्रवृत्ति के अनुसार शब्दों की ध्वनि नवीन सन्दर्भों के नवीन अर्थों को खोजती हुई सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय को मूर्तिमान बनाने में समर्थ है, कवयित्री के इस प्रवृत्ति में उनकी विषयानुरूप सूक्ष्म भावों का बिम्ब विधान और प्रतीक विधान पूरी तरह सहायक सिध्द हुआ है। दिनेश नन्दिनी के बिम्ब विधान के अन्तर्गत गत्यात्मक बिम्ब, ध्वनि-बिम्ब, भाव, करूण, उत्साह, भयानक, दृश्य, स्पर्श बिम्ब आदि बिम्बों का सजीव अंकन किया है। प्रतिकों की दृष्टि से दिनेश नन्दिनी ने कहीं स्वच्छन्द प्रकृति के अनुसार और कही परम्परागत रूचि के अनुसार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से प्रतिकों के ग्रहण करते हुए अपनी आन्तरिक चेतना को सजाकर और सँवार कर प्रस्तुत किया है। प्रतिकों के माध्यम से दिनेश नन्दिनी ने अपने वैयक्तिक अनुभूति, विरह प्रेम, वैवाहिक जीवन की विडम्बना, अतृप्तता, अन्तर्द्वन्द, घुटन, नश्वरता का एहसास, अपेक्षाभंग, पश्चाताप इत्यादि मनोवृत्तियों का सृजनात्मक चित्रण नवीन साहित्यिक धारा के अनुरूप किया है।

कवयित्री दिनेश नन्दिनी के कविता को अलंकार विधान के दृष्टि से देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी पदावली अलंकारिक भी है और अनेक पुरातन अलंकारों में नवीन संदर्भों की अभिव्यक्ति भी उसमें है। यहाँ तक कि मानवीकरण विशेषण विपर्यय, तथा ध्वन्यर्थ व्यंजना में भी कवयित्री ने अपनी सहज प्रवृत्ति का प्रस्तुतिकरण किया है। इन नवीन अलंकारों का प्रयोग इनकी स्वच्छन्द प्रकृति और काव्यात्मक सौन्दर्य तथा रस को ही व्यक्त करता हुआ दिखाई देता है।

काव्य-रूप की दृष्टि से कवयित्री ने प्रगीत-मुक्तक को ही अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। दिनेश नन्दिनी ने आत्माभिव्यक्ति के आधार पर भिन्न-भिन्न विषयों का चयन कर अपनी अन्तश्चेतना के भावों का ऐसा गुंफन किया, जिससे गीति-काव्य के सृजन की दृष्टि से यह कवयित्री आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य की परम्परा में विशिष्ट स्थान पाने के अधिकारिणी हैं।

अन्ततः कहा जा सकता है कि दिनेश नन्दिनी काव्य के शिल्प पक्ष के अन्तर्गत भाषा, बिम्ब, प्रतीक, अलंकार, छंद, प्रगीत इन समस्त रूपों में अतीत के स्मृति बिम्ब को संजो कर रखते हुए परम्परा को प्रवाह भी नहीं दे पाती। इस तरह उनकी यह परम्परा भी प्रगति-उन्मुख है। समय का सत्य उनके साथ-साथ चलता है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

1· दिनेश नन्दिनी डालमिया - सम्पा·आचार्य चतुर्वेदी, "कृतित्व के विविध आयाम", पृ·35

2· भाषा और संवेदना - रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ·1

3· हिरण्यगर्भा - श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·30,63,70

4· वही, पृ·12

5· वही, पृ·36

6· वही, पृ·52

7· वही, पृ·25

8· वही, पृ·47

9· वही, पृ·47

10· वही, पृ·38

11· छायावाद का सौन्दर्य - डा·कुमार विमल, पृ·169
शास्त्रीय अध्ययन

12· आधुनिक कवि और उनका काव्य - डा·दयानन्द शर्मा "मधुर", पृ·291

13· वही, पृ·291

14· वही, पृ·292

15· हिरण्यगर्भा - श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·45

16· वही, पृ·15

17· वही, पृ·66

18· वही, पृ·32

19· वही, पृ·63

20· वही, पृ·39

21· वही, पृ·42

22· वही, पृ·56

23· हिरण्यगर्भा - श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·9

24· वही, पृ·47

25· वही, पृ·23

26· वही, पृ·48

27· काव्य बिम्ब - डा·नागेन्द्र, पृ·12

28· हिरण्यगर्भा - श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·45

29· वही, पृ·75

30· वही, पृ·34

31· वही, पृ·41

32· वही, पृ·38

33· वही, पृ·31

34· वही, पृ·47

35· वही, पृ·52

36· वही, पृ·68

37· वही, पृ·54

38· वही, पृ·39

39· वही, पृ·24

40· वही, पृ·35

41· वही, पृ·37

प्रतीक योजना

42· मुक्तिबोध का शिल्प सौष्ठव - श्रीमती मधु श्रीवास्तव, पृ·54

43· वही, पृ·54

44· आधुनिक काव्य में प्रतीक विधान - डा·नित्यानन्द शर्मा, पृ·134-135

45· साहित्यशास्त्र - डा·रामकुमार वर्मा, पृ·118

46· चिन्तामणि भाग-1 - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ·176

47· हिरण्यगर्भा - दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·9

48· हिरण्यगर्भा - दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·44

49· वही, पृ·34

50· वही, पृ·19

51· वही, पृ·47

52· वही, पृ·16

53· वही, पृ·11

54· वही, पृ·36

55· वही, पृ·30

56· वही, पृ·19

57· वही, पृ·28

58· वही, पृ·69

59· वही, पृ·21

60· वही, पृ·16

61· आधुनिक कवि और उनका काव्य - डा·दयानन्द शर्मा "मधुर", पृ·300

62· मुक्ति बोध का शिल्प-सौष्ठव - श्रीमती मधु श्रीवास्तव, पृ·64

63· हिरण्यगर्भा - दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·44

अलंकार योजना

64· मुक्तिबोध का शिल्प सौष्ठव - श्रीमती मधु श्रीवास्तव, पृ·68

65· तार सप्तक - स·अज्ञेय, पृ·8

66· हिरण्यगर्भा - दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·21

67· वही, पृ·37-38

68· वही, पृ·43

69· वही, पृ·11

70· वही, पृ·23

71· वही, पृ·11

72· वही, पृ·16

73· वही, पृ·48

74· वही, पृ·58

75· वही, पृ·50

76· वही, पृ·11

77· वही, पृ·18

78· वही, पृ·24

79· वही, पृ·23

80· वही, पृ·29

81· मुक्ति बोध का शिल्प सौष्ठव - श्रीमती मधु श्रीवास्तव, पृ·77

82· हिरण्यगर्भ - दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·32

83· मुक्तिबोध का शिल्प सौष्ठव - श्रीमती मधु श्रीवास्तव, पृ·78

84· हिरण्यगर्भा - दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·36

85· वही, पृ·56

86· मुक्तिबोध का शिल्प सौष्ठव - श्रीमती मधु श्रीवास्तव, पृ·82

छंद-योजना

87· हिरण्यगर्भा - दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·28

88· वही, पृ·54

89· वही, पृ·42

90· वही, पृ·45

91· वही, पृ·37

92· वही, पृ·32

काव्य-रूप

93· आधुनिक कवि और उनका काव्य - डा·दयानन्द शर्मा "मधुर", पृ·323

94· हिरण्यगर्भा - श्रीमती दिनेश नन्दिनी, पृ·23

95· वही, पृ·41

96· वही, पृ·34

97· आधुनिक कवि और उनका काव्य - डा·दयानन्द शर्मा "मधुर", पृ·324

98· हिरण्यगर्भा - श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·52

99· आधुनिक कवि और उनका काव्य - डा·दयानन्द शर्मा "मधुर", पृ·325

100· हिरण्यगर्भा - श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया, पृ·35